समाज विकास

मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ फरवरी 2010 ▸ वर्ष ६० ▸ अंक 02

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन : चतुर्थ अधिवेशन

मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन अधिवेशन का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए। उपस्थित हैं सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रूँगटा, प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी एवं अन्य विशिष्ट अतिथि

प.बंग प्रा. मारवाड़ी सम्मेलन के दशम् अधिवेशन में श्री विजय गुजरवासिया ने अध्यक्ष पद ग्रहण किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रूँगटा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार एवं अन्य पदाधिकारीगण

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कोलकाता के टेंगरा में अग्निकांड पीड़ितों के बीच राहत कार्य में सामग्री वितरण करते हुए सांसद सुदीप बंद्योपाध्याय, सीताराम शर्मा, रामअवतार पोद्दार, ओम प्रकाश पोद्दार एवं संजय हरलालका

होली की शुभकामनाएं : उपाधियों का मुक्त हस्त वितरण

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

◆फरवरी 2010 ◆वर्ष 60 ◆अंक-2 ◆एक प्रति-10 रु. ◆वार्षिक-100 रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	५
कविता : पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए - दुष्यंत कुमार	५
अध्यक्षीय : अधिवेशन में नई ऊर्जा का प्रवाह सम्भव	६
जंतर-मंतर : रामनिवास मिर्धा : गाईस गुड मैन - सीताराम शर्मा	७
आओ विचारें बैठ कर - रामअवतार पोद्दार	८
अपनी बात : -शंभु चौधरी	९
पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दशम् अधिवेशन सम्पन्न	१०-११
कविता : (१) उलटी राह (२) लोकतंत्र का मजाक - परशुराम तोदी	११
झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन	
मारवाड़ी समाज में है अपार क्षमता - शिबू सोरेन, मुख्यमंत्री (झारखण्ड)	१२-१७
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति की पंचम बैठक	१९
होली की उपाधियां	२०-२१
मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर शाखा द्वारा बच्चों को कम्बल तथा स्वेटर प्रदान	२१
बिहार की पुष्पा देवी चोपड़ा को मिला जानकी देवी बजाज पुरस्कार	२२
तुलसी जैन 'आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य' पुरस्कार से सम्मानित	२२
मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर शाखा का 'शरद मेला'	२३
मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा अग्निकाण्ड पीड़ितों की सहायता	२४
मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन का सेवा कार्य	२५
सम्मेलन ने दी रामनिवास मिर्धा को श्रद्धांजलि	२६
कौस्तुभ जयंती वर्ष में ५ लोगों को सम्मानित करेगा सम्मेलन	२६
अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन की 'बढ़ते तलाक - चिंता एवं चिंतन' विषय पर संगोष्ठी	
बढ़ते तलाक का कारण सहनशीलता में कमी - सीताराम शर्मा	२७
पवन कुमार गोयनका अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन दिल्ली प्रदेश के सचिव नियुक्त	२७
अग्रसेन जयन्ती समारोह सम्पन्न	२८
राजस्थानी साहित्य में रणभूमि - ओंकार पारीक	२९
कविता : अपमान सहकर भी कुछ नहीं बोले - गौरीशंकर 'मधुकर'	३०
सम्मेलन की कानपुर शाखा द्वारा नि:शुल्क 'स्वास्थ्य मेला 2009' आयोजित	३०
कुमारी तूलिका डालमिया को इनटर्नशिप	३०
सितार और सरोदवादन की स्वप्निल ऊंचाइयां छुई हैं केडिया बंधु ने -लक्ष्मी प्रसाद अग्रवाल	३१
मुख्यमंत्री निवास से स्वेटर व कम्बल वितरण	३२
भाव सृष्टि रचती है लढ़ा की कविताएं - शर्मा	३२
व्यंग्य : लड़ना चुनाव सभापति का -डॉ. नथमल झंवर, सिगमा	३३

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ 152बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - 700007

फोन : 033-2268 0319 ◆ email-samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स.लि., 45बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता - 700009 से मुद्रित

◆ संपादक : नंदकिशोर जालान, ◆ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Courses Offered

- MBA, BBA and BCA
- Language Courses: Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, French, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, Korean, Sanskrit and Hindi
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Finance & Accounting
- Australian Diploma in Accounting
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training

Preparatory Courses

- MD, MS, MRCP (Medicine) Part I and DNB Part I
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelims and Main)
- WBCS-Executive and Judicial Services Examination (Prelims and Main)
- Chartered Accountancy (PE-I, PE-II and Final)
- NDA/CDS-UPSC Examinations and SSB Interview (Prelims and Main)
- Diploma in Banking and Finance
- CS (Company Secretary) Courses (Foundation, Intermediate and Final)
- Advocateship

Assistance for Admission to Grodno State Medical University, Belarus

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

चिट्ठी आई है

प्रिय श्री नंदलाल जी,

'समाज विकास' के अक्टूबर के अंक में आपने अध्यक्षीय सम्बोधन में 'फिजूलखर्ची को रोके मारवाड़ी समाज' शीर्षक से जो कहा है, उसका सबसे पेचीदा पक्ष यही है : 'जिनके पास है, वे किसी की भला क्यों सुनें ?' और आपका प्रयत्न इस अहंकारयुक्त बेसमझो से संघर्ष का है।

विवाह-शादी पर होने वाली फिजूलखर्ची का (1) प्रतीकात्मक और (2) वास्तविक महत्व अत्यधिक है। फिजूलखर्ची सबसे अधिक सबके सामने शादी-ब्याह पर हो आती है। दूसरे, इन अवसरों पर ही हर परिवार में वास्तव में सबसे अधिक व्यय होता है। इस पर जब प्रतिस्पर्धा की भावना भी आ जाती है, अभी सामर्थ्य का भी ध्यान नहीं रहता। जो सम्पन्न हैं वे तो निकल जाते हैं, जो इतने भाग्यशाली नहीं हैं वे बहुत दिन के लिए बहुत फंस जाते हैं।

दुरावस्था को दूर व्यवहारिक उपायों से ही किया जा सकता है। इस सिलसिले में मैं कुछ समय से विवाह संस्कार दिन के समय, सुबह के वक्त, करने की बात उठाता रहा हूं। इसका असर कम हुआ है, लेकिन कई प्रतिष्ठित एवं प्रभावी व्यक्ति भी इसका समर्थन करने लगे हैं। इस बारे में एक लेख बना था। उसकी प्रतिलिपि संलग्न कर रहा हूं। इसका प्रकाशन किशनगढ़ (राजस्थान) से प्रकाशित 'अध्यात्म अमृत' के दिसम्बर 2009 के सदाचार विशेषांक में हुआ है। यह जोड़ने की जरूरत तो नहीं होनी चाहिए कि यह लेख इस कारण कम ध्यान देने योग्य नहीं हो जाता।

ऐसा लगता है कि जैसे समाज सदा रहता है, उसी प्रकार उसमें सुधार के यत्न शास्वत रहने वाले हैं। समाज में अन्तर इससे आता है कि सुधार के प्रयत्न कब कहां कितने कामयाब होते हैं। यह हमें इसी पर लाता है कि प्रयत्न में सफलता के लिए प्रयत्नों में वेग लाना होगा। इस समय इस ओर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। कहां कोलकाता, कहां किशनगढ़। और कहां गोरखपुर। आप फिजूलखर्ची की बात उठा रहे हैं, 'अध्यात्म अमृत' का और सदाचार पर है, और 'कल्याण' जीवन चर्या अंक निकाल रहा है। इन सभी की दिशा एक हो और है- इस समय के समाज की समुन्नति की जाय।

-राजेन्द्र शंकर भट्ट
राम निवास बाग, जयपुर

-आज हमारे समाज में लड़का शादी लायक होने से सभी परिवार यही कहते हैं कि 'चोखो सम्बन्ध बताओ'। यहां 'चोखा' शब्द का अर्थ लड़का सुन्दर हो, शादी ठाट-बाट से हो, शादी में भरपूर माल मिले। आज देखा-देखी इतनी बढ़ गयी है कि जहां लड़की वाले का शादी में बीस पेटी खर्च होता है। लड़के वाले का भी दस पेटी खर्च हो जाता है। आमदनी अठन्नी, खर्च एक रुपया के कारण हर बड़े शहर में व्यापारी कर्ज से लदकर दिवाला निकाल देता है। एक जमाना ऐसा भी था कि, 'चोखो सम्बन्ध' का मतलब लड़की सुशील और सुन्दर हो, लड़की वाले खानदानी हो, मगर आज ऐसा देखने को नहीं मिल रहा है। देखा-देखी और अच्छे संस्कार के अभाव में आज बाप-बेटे में, सास-बहू में, भाई-भाई में अनबनी रहती है। सहनशक्ति के अभाव में, शादी के कुछ वर्ष बीतते ही 'तलाक' की नौबत आ जाती है। अगर वास्तव में देखा जाय तो गलती हमलोगों की ही है, हम अपने बच्चों को, शीघ्र एम.बी.ए., डाक्टर और बड़ा कारोबारी बनाना चाहते हैं। मगर अच्छा संस्कार देने की पहल नहीं करते हैं।

-परशुराम तोदी 'पारस'
सूरत (गुजरात)

कविता

पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए

फिर धीरे-धीरे यहां का मौसम बदलने लगा है,
वातावरण सो रहा था अब आँख मलने लगा है।

ये रोशनी है हकीकत में एक छत, लोगों
कि जैसे जल में झलकता हुआ महल लोगों!

हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए,
हम हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

तुमने इस तालाब में रोहू पकड़ने के लिये,
छोटी-छोटी मछलियां चारा बनाकर फेंक दी।

एक चिंगारी कहीं से ढूँढलाओ दोस्तों,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।

इस अंगीठी तक गली से कुछ हवा आने तो दो,
जब तलक खिलते नहीं, ये कोयले देंगे धुआँ।

यों तुझको खुद पे बहुत एतबार है लेकिन,
ये बर्फ आँच के आगे पिघल न जाए कहीं।

आज यह दीवार, पर्दों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिये।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशीश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये।

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग निकलनी चाहिये।

मेले में भटके होते तो कोई घर पहुँच जाता,
हम घर में भटके हैं, कैसे ठौर ठिकाने आएँगे।

यों पहले भी अपना सा यहाँ कुछ तो नहीं था,
अब और नजारे हमें लगते पराए।

उन्हें पता भी नहीं है कि उनके पाँवों से,
वो खूँ बह रहा है कि वे ये गर्द भी गुलाल है।

उनकी आपील है कि उन्हें हम मदद करें,
चाकू की पसलियों से गुजारिश तो देखिए।

-दुष्यंत कुमार

अध्यक्षीय :

अधिवेशन में नई ऊर्जा का प्रवाह संभव

- नन्दलाल रुंगटा, अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

पिछले दिनों सम्मेलन के तीन प्रान्तों असम, झारखण्ड और बंगाल के अधिवेशन सम्पन्न हुए। इन तीनों अधिवेशनों में मुझे भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ जहां असम के अधिवेशन को असम के मुख्यमंत्री श्री तरुण गोगोई और मेघालय के राज्यपाल श्री मुसाहरी ने संबोधित किया, वहीं झारखण्ड में राज्य के नये मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन एवं केन्द्रीय मंत्री श्री सुबोधकान्त सहाय का सान्निध्य हमें प्राप्त हुआ। मारवाड़ी समाज अलग-अलग प्रान्तों में अपनी भाषा और संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए साथ ही स्थानीय भाषा और संस्कृति को आत्मसात करते हुए स्थानीय विकास में न सिर्फ अपना योगदान दे रहा है, स्थानीय भाषा-संस्कृति की रक्षा व उसके विकास में भी महत्वपूर्ण योगदानों के प्रमाण मुझे देखने को मिले। एक स्वर में विभिन्न प्रान्तों के मुख्यमंत्री अपने भाषण में समाज की प्रशंसा करते हैं तो हमें सुनने में अति प्रिय तो लगता ही है साथ ही हमें इन कार्यों को आगे भी जारी रखने का उत्साह प्राप्त होता है।

सम्मेलन के इन अधिवेशनों से जहां समाज के नये ऊर्जा को सामने आने का अवसर मिला है वहीं कुछ प्रान्तों में लम्बे समय से चले आ रहे एक ही प्रतिनिधि को देख हमें कई बार चिन्तित भी करता है। सम्मेलन के कुछ प्रान्तों के चुनाव या तो लम्बे समय से हुए नहीं हैं, और यदि हुए हैं तो एक ही प्रतिनिधि का बार-बार आना स्थानीय संगठन की शिथिलता जाहिर करता है। नये प्रतिनिधियों का आना संस्था और समाज दोनों के लिए ही जरूरी है।

सम्मेलन के इन अधिवेशनों से जहां समाज के नये ऊर्जा को सामने आने का अवसर मिला है वहीं कुछ प्रान्तों में लम्बे समय से चले आ रहे एक ही प्रतिनिधि को देख हमें कई बार चिन्तित भी करता है। सम्मेलन के कुछ प्रान्तों के चुनाव या तो लम्बे समय से हुए नहीं हैं, और यदि हुए हैं तो एक ही प्रतिनिधि का बार-बार आना स्थानीय संगठन की शिथिलता जाहिर करता है। नये प्रतिनिधियों का आना संस्था और समाज दोनों के लिए ही जरूरी है।

जहां हमें सम्मेलन को मजबूत करना है वहीं समाज की कई समस्याओं की तरफ सम्मेलन को ध्यान देने की जरूरत है। आज समय के साथ-साथ समाज की समस्याएं भी बदली हैं। एक समय, समाज में महिलाओं की शिक्षा के प्रति समाज को जागरुक करने की समस्या थी, तो आज उच्च शिक्षा के लिये धन की उपलब्धता में कमी की समस्या सामने आने लगी है। एक समय टूटते परिवार की समस्या थी तो आज समाज के सामने वृद्धाश्रम के बढ़ते प्रचलन की समस्या सुरसा की तरह अपना मुंह खोले जा रही है। एक समय विधवाओं के विवाह की समस्या थी आज समाज में बढ़ते तलाक की। कहीं न कहीं मुझे लगता है हमारा समाज भी अपनी संस्कृति से विलुप्त होते जा रहा है। बच्चों में आज असहनशीलता की झलक साफ दिखाई देने लगी है। आमतौर पर समाज का एक वर्ग इसके कारण की तरफ से अपना पल्ला झाड़ते नजर आता है। परन्तु जब खुद इस परिस्थियों को झेलते हैं तो उनकी उंगली सम्मेलन की तरफ उठती नजर आती है।

हम इसे सकारात्मक लेते हैं और यह मानते हैं कि सम्मेलन को इस ओर समय रहते ध्यान देने की जरूरत है परन्तु इस कार्य को संपादित कौन करे? सम्मेलन की शक्ति प्रान्तों पर निर्भर करती है और प्रान्तों की ऊर्जा शाखा सभाओं से प्रभावित होती है। यदि इसके प्रभाव को रोक दिया जाय तो समाज कभी अपनी समस्याओं से एक होकर नहीं लड़ सकेगा।

हमारी इच्छा न सिर्फ सम्मेलन को मजबूत करना है बल्कि सम्मेलन के माध्यम से समाज की वर्तमान समस्याओं से हमें लड़ना होगा।

समाज का बहुत बड़ा वर्ग सम्मेलन के कार्यकलापों से प्रभावित होता आया है। वहीं सम्मेलन ने समाज की कई जरूरतों को संगठित रूप से सामना किया है। सम्मेलन के पद को कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति हेतु उपयोग करता हो तो ऐसे प्रतिनिधियों से समाज का कभी भला संभव नहीं हो सकता, भले ही वह व्यक्ति कितना ही सक्षम हो। ◆

जंतर मंतर

रामनिवास मिर्धा : गाड्स गुड मैन

- सीताराम शर्मा

राजनीति में रामनिवास मिर्धा जैसे कवि व्यक्ति विरले होते हैं। मेरा उनसे पिछले 30 वर्षों से अधिक का घनिष्ठ सम्पर्क रहा है। एक संस्था में वर्षों साथ काम किया, दर्जनों साथ में विदेश यात्रा की। चाहे मिर्धा जी केन्द्रीय मंत्री रहे हों या सत्ता से बाहर उनका व्यवहार बराबर एक जैसा रहा है। उनकी विनम्रता, मृदुभाषिता एवं सांस्कृतिक आचारण को देखते हुए मुल्कराज आनन्द ने उन्हें 'गुड्स गुड मैन' बताया था।

27-28 वर्ष की उम्र में राजस्थान में सिंचाई मंत्री से आरम्भ राजनैतिक यात्रा में 10 वर्ष तक राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष, वर्षों तक केंद्रीय मंत्री, राज्यसभा उपाध्यक्ष आदि विभिन्न पदों पर रहे। कला, साहित्य, संस्कृति से बराबर जुड़ाव रहा- एशियाड के उपाध्यक्ष, संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष रहे।

मिर्धा जी जब कभी भी कोलकाता पधारे चाहे वे किसी पद पर थे या नहीं - राज्यपाल ने सदैव उन्हें राजभवन में ठहरने के लिए आमंत्रित किया। एक बार मिर्धा जी के कोलकाता प्रवास के दौरान मैंने एक रात्रि भोज का आयोजन किया था। मैं मिर्धा जी को ले जाने के लिये राजभवन गया। तत्कालीन राज्यपाल श्री के.वी. रघुनाथ रेड्डी एवं मिर्धा जी एक साथ मुझे मिल गये। राज्यपाल जी ने कहा कि मुझे भी आप आमंत्रित करें तो मैं भी मिर्धाजी के साथ आपके रात्रिभोज में चलता हूं, मिर्धाजी के मेरे ऊपर कई उपकार हैं।

चर्चित हर्षद मेहता केस के बाद संसद द्वारा गठित जेपीसी के चेयरमैन रहे एवं सर्वदलीय समिति की एकमत से रपट प्रस्तुत की। विरोधी दलों का इनके प्रति इतना विश्वास एवं आदर था कि उक्त कमिटी की रिपोर्ट जमा करने के महीनों बाद भी तेजतर्रार कम्युनिस्ट सांसद गुरुदास गुप्ता ने मुझसे मिर्धा जी के सामने कहा- मैं इन्हें इनके गुणों के लिये अभी भी अपना चेयरमैन मानता हूं। वर्षों पहले की बात है श्री बी.डी. पाण्डे बंगाल के राज्यपाल थे। मिर्धा जी कलकत्ता पधारे। राजभवन में राज्यपाल के साथ एक औपचारिक संयुक्त राष्ट्र संघ संस्था की बैठक थी। राज्यपाल श्री पाण्डे ने मुझसे कहा कि आपने मुझे दुविधा में डाल दिया है। उस वक्त मिर्धा जी सिर्फ सांसद थे। राज्यपाल ने कहा कि वे केन्द्रीय गृह सचिव के रूप में मिर्धा जी के तहत कार्य कर चुके हैं जब श्री मिर्धा केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री थे, वे बैठक में बैठने की व्यवस्था के सम्बन्ध में दुविधा में थे।

मिर्धा जी जब कभी भी कोलकाता पधारे चाहे वे किसी पद पर थे या नहीं - राज्यपाल ने सदैव उन्हें राजभवन में ठहरने के लिए आमंत्रित किया। एक बार मिर्धा जी के कोलकाता प्रवास के दौरान मैंने एक रात्रि भोज का आयोजन किया था। मैं मिर्धा जी को ले जाने के लिये राजभवन गया। तत्कालीन राज्यपाल श्री के.वी. रघुनाथ रेड्डी एवं मिर्धा जी एक साथ मुझे मिल गये। राज्यपाल जी ने कहा कि मुझे भी आप आमंत्रित करें तो मैं भी मिर्धाजी के साथ आपके रात्रिभोज में चलता हूं, मिर्धाजी के मेरे ऊपर कई उपकार हैं।

अगस्त 2004 में मैंने मिर्धा जी के 80वें जन्म दिवस पर दिल्ली में एक आयोजन का कार्यक्रम बनाया। मुख्य समस्या थी मिर्धा जी को पार्टी के लिये राजी करना। अतिथियों की अधिकतम सूची 50 की होगी इस शर्त पर मिर्धा जी राजी हो गये। लेकिन यह कैसे संभव था-दर्जनों केंद्रीय मंत्री, 50-60 सांसद, कई मुख्यमंत्री पधारे। यह उनके प्रति सम्मान का एक बड़ा उदाहरण था। बहुत सी यादें हैं। 29 जनवरी 2010 को मिर्धा जी 86 वर्ष की आयु में हमें छोड़कर चले गये। मैंने अपना एक परिवारिक अभिभावक खो दिया है- जो मेरे सुख-दुख में सदैव साथ रहे। मेरे पुत्र-पुत्रियों के विवाह में नागपुर, कोलकाता सभी जगह पधारे। मेरे बाई-पास सर्जरी के समय जयपुर देखने आये। वे एक महान इन्सान थे।

◆

आओ विचारें बैठ कर

रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय मंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

यह अकाट्य सत्य है कि जब तक हम हमारे समाज के अतीत को नहीं जानेंगे, नहीं समझेंगे और वर्तमान परिपेक्ष्य में उसका तुलनात्मक चिन्तन-मनन नहीं करेंगे तबतक हम भविष्य की कोई भी ऐसी तस्वीर तैयार नहीं कर सकते जिसको रचनात्मक उपलब्धि कहा जा सके। यह बात केवल सामाजिक परिपेक्ष्य में ही नहीं बल्कि पारिवारिक परिपेक्ष्य में भी उतनी ही समीचीन है। हमें यह बताया गया है कि व्यक्ति से परिवार और परिवार से समाज होता है। इस बात को हम सीधे तरीके से समझें तो इन्सान समाज की एक इकाई मात्र है। परन्तु नियति ने उसे चिन्तन शक्ति तथा श्रम की प्रेरणा प्रदान कर उसके स्वरूप को व्यापक बना दिया है। संगठन की सोच उसी व्यापकता की द्योतक है। तात्पर्य यह है कि सामाजिक इकाई के लिए समाज हित का विचार करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना महत्व वह स्वयं के तथा अपने परिवार के हित को देता है। जिन लोगों ने ऐसा किया है वे हमारे समाज के आदर्श बन गये हैं, उदाहरण बन गए हैं, इतिहास पुरुष बन गए हैं। उन्होंने इस सार्थक सत्य को अच्छी तरह समझ लिया था कि सामाजिक अपेक्षानुकूल सुदृढ़ और संस्कार युक्त है तो पारिवारिक व्यवस्था में अपने परम्परागत संस्कार विद्यमान रहेंगे तो भटकाव की संभावना काफी हद तक कम हो जाएगी।

कितने दूरदर्शी रहे होंगे वे लोग जिनके जीवन में ऐसे सिद्धान्त रहे। अपने उपार्जन का एक बड़ा हिस्सा समाज हित में लगाते रहे और स्वयं सादा जीवन बिताते रहे। उनकी इसी लोकोपकारी भावना के जीवन्त उदाहरण पूरे भारतवर्ष में ही अनेक मंदिर, धर्मशालाएं, विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल, वाचनालय, पुस्तकालय, छात्रावास आदि के रूप में विद्यमान हैं।

कितने दूरदर्शी रहे होंगे वे लोग जिनके जीवन में ऐसे सिद्धान्त रहे। अपने उपार्जन का एक बड़ा हिस्सा समाज हित में लगाते रहे और स्वयं सादा जीवन बिताते रहे। उनकी इसी लोकोपकारी भावना के जीवन्त उदाहरण पूरे भारतवर्ष में ही अनेक मंदिर, धर्मशालाएं, विद्यालय, महाविद्यालय, अस्पताल, वाचनालय, पुस्तकालय, छात्रावास आदि के रूप में विद्यमान हैं। मेरी समझ में ये केवल भवन मात्र नहीं हैं अपितु ये सभी सामाजिक ग्रंथ के वो अध्याय हैं जो हमारी चेतना, हमारी समझ व हमारे विवेक को ऐसी दिशा का दर्शन करवाने के लिए रचे गये हैं जिनसे स्व की सीमित परिधि से निकाल कर हमें समग्र की व्यापकता का बोध हो सके। जिनको क्रियान्वित करना केवल एक व्यक्ति-एक परिवार या एक कुल की यश वृद्धि कर सकता है बल्कि इससे तो समग्र समाज को आलोकित कर देने वाला दिव्य प्रकाश प्रष्फुटित होता है।

वर्तमान समय में सब उलट गया है। आज सोच में पहला स्थान स्वयं के हित को, दूसरा परिवार के हित को और इन दोनों हितों की पूर्ति के पश्चात भावनाएं उद्वेलित हों तो तीसरा स्थान समाज हित को दिया जा रहा है और अगर कोई समाज हित का विचार करता भी है तो उसके पीछे प्रचार के समीकरण जुड़े होते हैं। फलतः हमारे त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, उदार समाज हितैषी पुरखों द्वारा बनाई गई समाज हित की राह पर संकीर्ण विचारधारा की इतनी कंटीली घास उग आई है कि वह कल्याणकारी मार्ग धूमिल हो गया है। नतीजा यह कि नये-नये आयाम और उदाहरण स्थापित करना तो दूर पुरखों द्वारा स्थापित उदाहरणों के रख-रखाव में भी उदासीनता दिखाई जा रही है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में हम कैसे एक सुदृढ़ समाज की परिकल्पना कर सकते हैं? सम्भवतः ऐसे ही हालातों पर विचार कर राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने यह कहा होगा कि -

हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें बैठ कर ये समस्याएं सभी॥

कितनी सटीक पंक्तियां हैं। सच यही है कि हम सभी विचार कर देखेंगे तो पाएंगे कि हमारा समाज क्या था, क्या हो गया है। यह वैचारिक बदलाव भटकाव की किस घोर अन्धकारमयी दिशा में ले जा रहा है जब तक यह पूरी तरह समझेंगे तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। पर सच यही है कि वर्तमान पीढ़ी की रफ्तारमयी जीवन शैली इस पर विचार करने के लिए समय निकालने को समय की बर्बादी समझने लगी है। धीरे-धीरे आसार ये दृष्टिगत होने लगे हैं कि दुनिया में उदारता, सदाशयता, सहृदयता, कर्मठता और व्यवहार कुशलता की स्वर्णिम पहचान माने जाने वाले हमारे मारवाड़ी समाज की विशिष्टता रूपी मीनार की नींव में हमारे परोपकारी, दूरदर्शी बुजुर्गों की समर्पित भावनाओं की ईंटें लगी हुई हैं वे ईंटें दरकने लगेंगी। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन इस दिशा में निरन्तर सक्रियता पूर्वक कार्य करता रहा है। उद्देश्य केवल यही कि हमारे समाज की उज्ज्वल छवि धूमिल न हो पर अभी तक कोई उल्लेखनीय परिणाम नहीं आया है। इसकी वजह केवल यही है कि आज का समाज सम्मेलन को समझना नहीं चाहता और सम्मेलन भी शायद ऐसा कुछ कर पाने में सफल नहीं हुआ है जिससे वह समग्र समाज के आकर्षण का केन्द्र बन सके। आओ विचारें बैठ कर कि हमें समाज से एकाकार होने के लिए क्या करना चाहिए।

अपनी बात :

शिव तो सांप पाल राख्यो हो यो शेर कठे से आग्यो

- शंभु चौधरी

होली आते ही म्हारे भी एक व्यंग्य लेख लिखनो रो मन होग्यो, सोच्यो क्यों ने राजस्थानी भाषा में ही लिख्यो जाए। सो मन में काफी विचार कर्‌यो, रात ने लुगाई से मंत्रणा कर लिखण लाग्यो। सोच्यो आजकल 'बाल ठाकरे' पर 'राज ठाकरे' को राज हो राख्यो है। जंईया ही राज ठाकरे कुछ बोलन लाग्ये 'बाल ठाकरे' को अपणी सत्ता सरकती नजर आने लाग्यी, बस आव देख्यो न ताव, धराधर बूढ़ो शेर कमरा में पड़ो-पड़ो दहाड़ण लाग्यो, एक तरफ तो वो हिन्दू धर्म की चिन्ता करे, दूसरी तरफ हिन्दुस्तान की और तीसरी तरफ मराठावासी की। अब एक साथ सारी दुनियां की चिन्ता तो कर कोनी सके, बूढ़ो जो होग्यो सो याददास्त भी कमजोर होग्यी होसी। अब ये भी देख्यो हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए एक सेना भी बना डाली नाम भी हिन्दू धर्म से मिलतो-जुलतो राख्यो- 'शिव सेना' सारा भारत में अच्छो समर्थन मिलो भारत का हिन्दू विचारधारा का युवक आनन-फानन में अपणे-अपणे शहर में 'शिवसेना' की शाखा खोलण लाग्या। म्हारे गांव में भी एक बेकार छोरो 'श्याम' शमो थो सो उणने भी धूण लागगी 'शिवसेना' की शाखा खोलण की। आव देख्यो न ताव बींने 'शिव सेना' की शाखा खोल ली और लाग्यो गांव में धूम मचाण। 'सामना' समाचार पढ़ण लाग्यो, मराठी में बात करण लाग्यो, घर में हंगामो मचाण लाग्यो। एक दिन घर हाल्यां श्याम ने जबर्दस्ती पकड़ के डाक्टर ने दिखाण लेग्या। डाक्टर ने छोरा री मां बताई कि आजकल यो छोरो पागल सी बातां करण लाग्यो, घर में ही बोलण लाग्यो कि सब बिहारी ने मुंबई छोड़नो होसी। अब आप ही बताओ की गाँव म रहकर बिहारी ने मुम्बई छोड़ने की बात करोग्यो तो गांव बाला इको कै हाल बना देसी। मेरी तो समझ में ही कोणी आवे 'ई छोरा क कै होग्यो।' डाक्टर काफी देर तक सोच विचार कर बोल्यो इणके 'बाल रोग' होग्यो अब यो राज करेगो ईको इलाज मुम्बई में ही होसी सो जल्दी से इणे मुंबई ले जायो। घर हाल्या डाक्टर री बात सुनकर बहुत परेशान होग्या, गांव से ही फोन लगा मुम्बई को डाक्टर खोजण लाग्या।

मुंबई में डॉक्टर मुन्ना भाई से फोन पर बात होग्यी सो आनन-फानन में छोरा न दो जनां कस कर रस्सी बांध एक कमरे में डाल दियो। मुन्ना भाई बठे से बैठो-बैठो फोन पर बतातो बइयां को ही ईलाज घर वाला करण लाग्या। एक दिन डाक्टर मुन्ना भाई फोन पर बोल्यो छोरा न अब छोड़ दो। ठीक होग्यो है। घर वाला न समझ में कुछ कोनी आयो। पर घरवाला नै डाक्टर की बात पर पूरो विश्वास थो, सो श्याम ने छोड़ दियो।

श्याम छोड़ते ही बोलन लाग्यो पाकिस्तानी खिलाड़ियां ने भारत में खैलण कोणी देवां। या बात सुन घर वाला बोल्या छोरो ठीक बोलण लाग्यो। दूसरे दिन गांव में होलीक जलावण रो कार्यक्रम हो, गांव वाला श्याम न मंच पर बैठा दिया, श्याम होलीरो स्वांग कर मुँह में शेर को मुखोटो लगार, मंच पर बैठग्यो, गांव वाला पूछण लाग्यो यो शेर कुण सा पिंजड़ा से बारण आयो है। जंगल में से सारा शेर गायब हो गया सारा का सारा शेर मुंबई में **माई नेम इज खान** की शूटिंग में भाग ले राख्या है यो गांव में कठै से आग्यो। व्यवस्थापक बतावण लाग्यो कि यो शेर नहीं आपणो श्याम है- यो 'शिव सेना' ज्वाइन कर राखी है सो शेर को खोळ पहन राख्यो है। गांव वाला तो ठहरा अनाड़ी का अनाड़ी, बोल्यां भाया यो तो बात ठीक सा पर शिव ने तो सांप पाल राख्यो हो यो शेर कठै से आग्यो। ◆

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दशम अधिवेशन सम्पन्न

चुनौतियों का सामना करने में दक्ष है मारवाड़ी समाज : नन्दलाल रुँगटा

बायें से दायें - *श्री विश्वनाथ भुवालका, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त मंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार।*

कोलकाता। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दशम अधिवेशन रविवार, 7 फरवरी को महाजाति सदन के एनेक्सी हॉल में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उद्घाटन भाषण देते हुए सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि सच्चाई यह है कि पूरे भारतवर्ष का हृदय कोलकाता शहर है। कोलकाता के हर अच्छे या बुरे कार्य का प्रभाव पूरे भारतवर्ष में फैले मारवाड़ी समाज पर पड़ता है। राजस्थानी भाषा (मारवाड़ी) में अपना ओजस्वी भाषण देते हुए आपने निर्वाचित अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया को शुभकामनाएं प्रेषित की। आपने कहा कि सम्मेलन ने बड़ी-बड़ी चुनौतियों का सामना किया है। मारवाड़ी समाज जहां गया, वहां का होकर रहा। जिस प्रदेश में मारवाड़ी समाज गया, वहां की भाषा, संस्कृति को अपनाया।

दशम अधिवेशन का दीप जलाकर उद्घाटन करते हुए अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार के साथ श्री विजय गुजरवासिया, श्री रामगोपाल बागला, श्री विश्वनाथ भुवालका, श्री विजय डोकानिया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रुँगटा ने कहा कि चुनौतियों का सामना करने में मारवाड़ी समाज दक्ष है। समाज के लोगों ने व्यवसाय के साथ समाज सेवा को बढ़ाया। मारवाड़ी समाज सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रहा है लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में गरीब बच्चे पिछड़ रहे हैं। उन्हें प्रोत्साहित करने की जरूरत है। मेधावी बच्चे आर्थिक अभाव में अच्छी शिक्षा नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। उन्हें सहयोग करने की आवश्यकता है। फिजूलखर्ची रोकने के लिए पहले हमें खुद आगे बढ़ना होगा। समाज में बढ़ रहे मद्यपान पर उन्होंने चिंता प्रकट की। श्री रुँगटा ने मारवाड़ी समाज को राजनीति में आने की बात कही। उन्होंने कहा

कि आजकल के जमाने में व्यूरोक्रैट की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। इसमें हमारे समाज का प्रतिनिधित्व काफी कम संख्या में है। उसे बढ़ाने की आवश्यकता है।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री विजय गुजरवासिया ने इस मौके पर कहा कि पूर्व अध्यक्ष स्व. लोकनाथ डोकानिया एवं स्व. विश्वनाथ सुल्तानिया का सम्मेलन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान था। उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सम्मेलन के 75 वर्ष पूरे होने पर आयोजित कार्यक्रमों में सभी को बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने की आवश्यकता है। समाज के हर परिवार से कम से कम एक सदस्य को उन्होंने सम्मेलन का सदस्य बनाने का अनुरोध किया।

इससे पूर्व स्वागताध्यक्ष श्री विजय कुमार डोकानिया ने कहा कि सम्मेलन को आगे बढ़ाने में सभी सदस्यों का सहयोग जरूरी है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान में एकजुटता की अपील की। राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त मंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार, उपाध्यक्ष श्री विश्वनाथ भुवालका ने सम्मेलन को मजबूत बनाने पर बल दिया। इससे पूर्व सचिव श्री राम गोपाल बागला ने सम्मेलन के समाजसेवा मूलक कार्यों पर विस्तृत प्रकाश डाला। संचालन श्री संजय हरलालका ने किया। इस मौके पर सर्वश्री घनश्यामदास शोभासरिया, के.के. सिंघानिया, के.के. पोद्दार, दामोदार प्रसाद बिदावतका, आर.के. सफ्फर, महेंद्र गुप्ता, सुशील कोठारी, के.पी. धेलिया, इंद्रचंद्र महरीवाल, एन.के. अग्रवाल, शिवकुमार क्याल सहित प्रदेश भर के सम्मेलन सदस्य उपस्थित थे। दूसरे सत्र का संचालन श्री शंभु चौधरी ने किया।

इस अवसर पर तीन प्रस्ताव भी पारित किए गए जो निम्न प्रकार हैं एवं एक प्रस्ताव समर्थन के अभाव में पारित नहीं हो सका।

पारित प्रस्ताव (1)

नारी ही नहीं पुरुष भी प्रताड़ित

वर्तमान समय में सम्मेलन सिर्फ नारी प्रताड़ना के मामले में हस्तक्षेप करता है। अब से सम्मेलन नारी की जगह 'व्यक्ति प्रताड़ना' शब्द का प्रयोग करेगा। ताकि आने वाले समय में पुरुष वर्ग पर नारी द्वारा किए जाने वाले प्रताड़ना के मामले में स्मेलन हस्तक्षेप कर सके।

प्रस्तावक : घनश्यामदास शोभासरिया
समर्थक : सुशील कोठारी

इस प्रस्ताव के समर्थन में श्री गिरधारी लाल पारिक एवं श्री विजय डोकानिया ने भी अपने विचार रखे। प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

पारित प्रस्ताव-2

टूटते परिवार एवं बढ़ते तलाक

समाज में टूटते परिवार एवं बढ़ते तलाक पर आज समाज अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए सम्मेलन को इस दिशा में अपनी निर्णायक भूमिका निभाने की आवश्यकता है।

प्रस्तावक : गोपाल प्रसाद डोकानिया
समर्थक : राधाकिसन सफ्फर

इस प्रस्ताव में हिस्सा लेते हुए सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने बताया कि एकल परिवार में भी टूट आने लगी है। सहनशीलता का अभाव बच्चों में दिखने लगा है। आपने इस बात पर ध्यान देने पर जोर दिया कि हमें अपनी संस्कृति, धरोहर को किस प्रकार अपने बच्चों में स्थानांतरण किया जा सके। इस क्षेत्र में सम्मेलन को कार्य करना जरूरी हो गया है। इस प्रस्ताव में श्री घनश्यामदास शोभासरिया ने भी हिस्सा लिया। प्रस्ताव को सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

पारित प्रस्ताव- (3)

विवाह समारोह पर होने वाले फिजूलखर्ची एवं दिखावा

सम्मेलन आज यह प्रस्ताव ग्रहण करे कि मारवाड़ी समाज में हो रहे विवाह, शादी समारोह के अवसर पर होने वाले फिजूलखर्ची एवं दिखावा, जैसे महंगे निमंत्रण कार्ड, मिठाईयों का वितरण और महंगे पैकिंग खर्च एवं आडम्बर युक्त विवाह आदि का पुरजोर विरोध करती है एवं समाज के लोगों से अनुरोध है कि वे ऐसे समारोह का सांकेतिक बहिष्कार करें।

प्रस्तावक - नन्द किशोर अग्रवाल
समर्थक - शिव कुमार क्याल

प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

अस्वीकृत प्रस्ताव-(4)

धार्मिक अनुष्ठानों पर होने वाली फिजूलखर्ची एवं दिखावा

आज का दशम अधिवेशन यह प्रस्ताव ग्रहण करता है कि समाज में आडम्बर युक्त फिजूलखर्ची एवं दिखावा रूपी हो रहे धार्मिक अनुष्ठानों को आडम्बर रहित करने का समाज से निवेदन करता है।

प्रस्तावक - इन्द्रचंद महरीवाल
समर्थक - दामोदर विदावतका

इस प्रस्ताव पर श्री ओम प्रकाश पोद्दार, श्री रतन जैन (कलिपुर) एवं श्री सुशील कोठारी ने हिस्सा लिया। प्रस्ताव को पुन:विचार हेतु वापस कर दिया गया।

❖❖❖

कविता

उलटी राह

किसे पड़ी है देश की, सबको कुर्सी की चाह।
इसीलिये तो चल रहे, निस दिन उलटी राह।
निस दिन उलटी राह, कर रहे ये घोटाले।
दिशाहीन है देश, और इनके मुंह काले।
कह 'पारस' कविराय, सत्य तो सदा बड़ा है।
नहीं झूठ का हुआ कभी भारी पलड़ा है।

लोकतंत्र का मजाक

लोकतंत्र का हो रहा, कैसा यहाँ मजाक।
अनपढ़ तो मंत्री बने, राज करे क्या खाक।
राज करे क्या खाक, नहीं कुछ इनको आता।
बिना चुने ही राजनीति से, जुड़ता जाता।
कह 'पारस' कविराय, देश कब सुधरेगा,
बिना योग्यता कोई उन्नति नहीं करेगा?

***-परशुराम तोदी 'पारस'**, सूरत (गुजरात)*

मारवाड़ी समाज में है अपार क्षमता

-शिबू सोरेन, मुख्यमंत्री (झारखण्ड)

स्मारिका का लोकार्पण करते हुए झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन के साथ अ.भा.मा. सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुँगटा, श्री हनुमान प्रसाद सरावगी, प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी, श्री सी.पी. सिंह, श्री ललित केडिया, श्री धर्मचन्द जैन ।

रांची। मारवाड़ी समाज दुनिया में कुछ करने की क्षमता रखता है। इस समाज ने दुनिया देखी है। प्रत्येक राज्य, शहर, देश-विदेश में मारवाड़ी समाज के लोग निवास करते हैं। मुख्यत: व्यापार से जुड़े लोगों को मारवाड़ी कहा जाता है। झारखंड एक धनी राज्य है। इसके पास पर्याप्त खनिज सम्पदा है। ये बातें मुख्यमंत्री शिबू सोरेन ने कहीं। श्री सोरेन हरमू रोड स्थित मारवाड़ी भवन में आयोजित सम्मेलन के चतुर्थ प्रांतीय अधिवेशन में मुख्य अतिथि के पद से बोल रहे थे। समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री सोरेन ने कहा कि मारवाड़ी लोग राजस्थान के मूल निवासी हैं परंतु ये हर जगह अलग-अलग जाति वर्ग के लोगों से घुल मिकर रहते हैं। इनकी जीविका का मुख्य आधार व्यापार है। व्यापार विनिमय और वितरण का एक व्यापक माध्यम है। उन्होंने कहा कि आदमी तब बड़ा बनता है जब उसमें कुछ करने की क्षमता होती है। कर्म और कर्तव्य की कोई जाति नहीं है। उन्होंने कहा कि व्यापार के क्षेत्र में तथा बड़ी-बड़ी कम्पनियों में मारवाड़ी समाज के लोग मौजूद हैं। समाज में अलग-अलग वर्ग एवं जाति के लोग रहते हैं उनके विचार मिलते जुलते हैं। श्री सोरेन ने उदाहरण देते हुए कहा कि विधानसभा अध्यक्ष सी.पी. सिंह और मैं अलग-अलग पार्टियों के हैं परंतु हमारे विचार मिलते जुलते हैं।

उद्घाटन समारोह में श्री सोरेन ने बताया कि उनका जन्म जंगल में हुआ था तथा उनकी लड़ाई जमीनदारों के खिलाफ थी। उन्होंने कभी मुख्यमंत्री बनने के बारे में नहीं सोचा था। उन्होंने बताया कि राजनीतिक करने वाले जेल जाते हैं। वे भी जेल गये हैं। चोर और अपराधी भी जेल जाते हैं।

आदिवासी समाज के बारे में उन्होंने कहा कि यह एक पिछड़ा समाज है। ये सीधे-साधे होते हैं। दुख की बात है कि समाज के पढ़े लिखे लोगों से समाज के अन्य लोगों को अपेक्षित सहयोग नहीं मिल रहा है। इससे पहले श्री सोरेन ने तथा विशिष्ट अतिथि विधानसभा अध्यक्ष ने संयक्त रूप से दीप जलाकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। सबसे पहले लिपिका गाड़ोदिया, वसुधा गाड़ोदिया और निशा बंका ने गणेश वंदना प्रस्तुत की। इसके पूर्व मुख्य अतिथि तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों ने डा. राम मनोहर लोहिया के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

विधानसभा अध्यक्ष सी.पी. सिंह ने कहा कि देश के अंदर रहने वाले सभी समाज एक हैं। हर समाज की तरक्की होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि समाज के सभी वर्गों का जब विकास होगा तभी वर्गों का जब विकास होगा तभी देश का विकास संभव है। उन्होंने हर समाज के लोगों को मारवाड़ी समाज से प्रेरणा लेने आह्वान किया। श्री सिंह ने कहा कि इस समाज के लोगों ने सामूहिक विवाह का प्रचलन किया है। जिसे अन्य समाज के लोग अपना रहे हैं। यह एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है। इससे दहेज रूपी भयानक कुप्रथा का अंत हो सकता है। दहेज से भी भ्रष्टाचार बढ़ता है। उन्होंने कहा कि भूख से मरने वाले की अपेक्षा ज्यादा खाने वालों की मौत होती है। समाज में गरीबी और अमीरी की खाई मिटानी चाहिए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिबू सोरेन ने स्मारिका का विमोचन किया। इस स्मारिका के सम्पादक वेद प्रकाश अग्रवाल तथा सम्पादकीय सहयोगी बसंत मित्तल हैं।

समारोह में मुख्यमंत्री ने कला के क्षेत्र में गिरिडीह के केडिया बंधुओं और पत्रकारिता के क्षेत्र में वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम अग्रवाल को शॉल ओढ़ाकर तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में स्वागत भाषण धर्मचन्द्र जैन राय ने किया।

कार्यक्रम का संचालन वेद प्रकाश अग्रवाल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन महामंत्री कमल केडिया ने किया। अधिवेशन स्थल का नाम डा. रामनोहर लोहिया नगर रखा गया। वेद प्रकाश अग्रवाल, कमल केडिया, प्रदीप तुलस्यान, भागवचंद पोद्दार, वसंत मित्तल, लिपिका गाड़ोदिया, वसुधा गाड़ोदिया, निशा बंका, हनुमान सरावगी, गोविन्द डालमिया, जमुना शर्मा, उमाशंकर बियाणी व अशोक नासरिया समेत लोहरदहा, लातेहार, चंदवा, गुमला, साहेबगंज, पाकुड़ तथा पलामू सहित अन्य क्षेत्रों के लोग बड़ी संख्या में मौजूद थे।

भाषा और संस्कृति को संभाल कर रखें : रुँगटा

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने राजस्थानी भाषा में झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन को सम्बोधित किया। श्री रुँगटा ने आशा व्यक्त की कि मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के नेतृत्व में राज्य भयमुक्त होकर नयी ऊंचाई पर पहुंचेगा। इससे राज्य का अपेक्षित विकास होगा। उन्होंने मारवाड़ी समाज के लोगों से अपनी भाषा, संस्कृति आदि को संभाल कर रखने की सलाह दी। उन्होंने मारवाड़ी समाज के लोगों को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र की महत्ता को समझाते हुए समाज के प्रत्येक व्यक्ति से मताधिकार का प्रयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने मारवाड़ी समाज के लोगों से अपनी भाषा में बात करने की अपील की।

मारवाड़ी समाज से प्रेरणा लें : सीपी सिंह

मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन के विशिष्ट अतिथि विधानसभा अध्यक्ष सीपी सिंह ने कहा कि मारवाड़ी समाज जहां भी गया है, वहां उसने अपनी पहचान छोड़ी है। हमें समाज के अंदर विषमता दूर करनी होगी। विवाह में बढ़ता खर्च भी भ्रष्टाचार का एक कारण है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज के कार्यों से अन्य समाज को भी प्रेरणा लेनी चाहिए। समाज द्वारा वैवाहिक परिचय सम्मेलन, शिक्षा, स्वास्थ्य सभी क्षेत्रों में उपयोगी काम हो रहे हैं। सारे समाज को मिलकर राष्ट्र निर्माण करना है।

विकास में सभी योगदान दें : सुबोधकांत

मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन के समापन समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय ने कहा कि मारवाड़ी समाज सभी कार्यों में बढ़ चढ़कर भाग लेता है। मारवाड़ी समाज में आर्थिक स्वावलंबन की भावना है। इस तरह की भावना को हमेशा बनाए रखने की जरूरत है, तभी सबका भला होगा। उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियों से कहा कि राज्य के विकास और एकता में योगदान दें। सरकार के भरोसे नहीं समाज के भरोसे राज्य का उत्थान करें।

मारवड़ी समाज दायरा बढ़ाए : बाबूलाल

समापन समारोह के विशिष्ट अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने कहा कि सेवा के क्षेत्र में मारवाड़ी समाज ने बहुत काम किया है। मारवाड़ी समाज को समाज सेवा का दायरा बढ़ाना चाहिए। समाज के लोगों को गांव-गांव में जाना चाहिए और राज्य के पिछड़े गावों को गोद लेकर वहां का विकास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आम लोगों को सुरक्षा की गारंटी मिलनी चाहिए। इससे लोग भयमुक्त होकर कार्य करेंगे, तभी विकास होगा।

मारवाड़ी संस्कृति सर्वस्पर्शी : विनय सरावगी

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी ने कहा कि जिनका जीवन मारवाड़ी संस्कृति से संबंधित हैं, वह मारवाड़ी है। वह चाहे किसी भी जाति, उपजाति वर्ग, धर्म और भाषा के हों। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी संस्कृति व्यापक एवं सर्वस्पर्शी है। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय दृष्टि से राजस्थान, हरियाणा तथा मालवा (मध्य प्रदेश) के मूल निवासी ही मारवाड़ी है। इनकी मारवाड़ी संस्कृति हैं। श्री सरावगी ने कहा कि मारवाड़ी समाज की परम्परा अति प्राचीन है। भारत का पुराकालीन इतिहास राजस्थान की शौर्य गाथा, इनके शूर-वीरों के पराक्रम एवं बलिदान की गाथाओं से भरा हुआ है। उन्होंने कहा कि पुरुषों की भांति मारवाड़ी महिलाओं का भी गौरवशाली इतिहास है।

उदितवाणी के सम्पादक श्री राधेश्याम अग्रवाल को सम्मानित करते झारखण्ड के मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन के साथ अ.भा.मा. सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुँगटा, प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी व अन्य।

मारवाड़ी समाज के प्रति आभारी हूं : राधे श्याम अग्रवाल

झारखंड राज्य मारवाड़ी सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन में पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान के लिए जमशेदपुर से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र उदितवाणी के संपादक राधेश्याम अग्रवाल को सम्मानित किया गया।

श्री अग्रवाल को शाल ओढ़ाकर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। श्री अग्रवाल ने कहा कि वह इस सम्मान के लिए मारवाड़ी समाज केप्रति आभारी हैं। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज के प्रति शुक्रगुजार हूं जिससे मुझे इस सम्मान के लायक समझा। मुझे तो स्वयं पता नहीं कि समाज में मेरा क्या योगदान रहा है फिर भी मैं इस सम्मान के लिए मारवाड़ी समाज के प्रति आभारी हूं। उन्होंने कहा कि मुझे इस बात की खुशी है कि जिन लोगों ने उदितवाणी से पत्रकारिता सिखी आज वे देश के विभिन्न अखबारों में काम कर रहे हैं। इससे मैं गोर्वान्वित भी होता हूं।

उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि पत्रकारिता के पेशे में गिरावट आयी है परंतु अभी भी इस पेशे में ईमानदार लोगों की कमी नहीं है।

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन

आखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से सम्बद्ध झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का चतुर्थ प्रान्तीय अधिवेशन ३०-३१ जनवरी २०१० को राजधानी राँची में राँची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में डा० राम मनोहर लोहिया नगर, मारवाड़ी भवन परिसर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में सम्पूर्ण झारखण्ड से बड़ी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

अधिवेशन के आयोजन हेतु समाज के प्रमुख व्यक्तियों की एक स्वागत समिति गठित की गयी, जिसमें श्री धर्मचन्द जैन रारा को स्वागताध्यक्ष तथा श्री वेदप्रकाश अग्रवाल को स्वागत मंत्री बनाया गया। इनके अतिक्ति विशिष्ट महानुभावों को परामर्शदात्री समिति का सदस्य, उप-स्वागताध्यक्ष, संयुक्त स्वागत मंत्री, उप-स्वागत मंत्री तथा स्वागत समिति का सदस्य बनाया गया।

अधिवेशन के प्रथम दिन ३० जनवरी को संध्या ४ बजे से अधिवेशन स्थल में प्रान्तीय सभा की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी ने की। प्रान्तीय सभा की बैठक में प्रान्तीय महामंत्री श्री कमलकुमार केडिया ने गत बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनायी, जिसकी पुष्टि की गयी। बैठक में सदस्यों ने अधिवेशन से सम्बंधित विषयों तथा अन्य विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये।

प्रान्तीय सभा की बैठक के बाद जैन महिला जागृति तथा जैन युवा जागृति के तत्वावधान में एक आकर्षक व सुरुचिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के संयोजक श्रीमती विजया जैन रारा तथा श्री पंकज जैन पांड्या ने अत्यंत कुशलतापूर्वक कार्यक्रम की प्रस्तुति की। सभी उपस्थित लोगों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात भोजन उपरांत विषय निर्वाचनी समिति की बैठक हुई, जिसमें अधिवेशन में विचारणीय मुद्दों तथा खुले अधिवेशन में प्रस्तुत किये जाने वाले प्रस्तावों पर व्यापक विचार-विमर्श के बाद निर्णय किया गया। अनेक प्रस्तावों पर चर्चा के पश्चात सात प्रस्तावों को अंतिम रुप दिया गया।

अधिवेशन के मुख्य दिवस ३१ जनवरी को प्रात: से ही झारखण्ड के विभिन्न स्थानों से प्रतिनिधियों का आगमन आरंभ हुआ। रांची जिला मारवाड़ी सम्मेलन के मंत्री तथा अधिवेशन के संयुक्त स्वागत मंत्री श्री प्रकाश चन्द बजाज के नेतृत्व में प्रतिनिधियों के पंजीकरण का कार्य किया जा रहा था। निर्धारित समय पर प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी ने झंडोत्तोलन किया और इसी के साथ मुख्य अधिवेशन का विधिवत शुभारंभ हुआ।

झंडोत्तोलन के पश्चात अधिवेशन के उद्घाटन समारोह हेतु प्रतिनिधिगण व स्थानीय समाज बंधु सभागार में एकत्र हुए। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन, विशिष्ट अतिथि माननीय विधान सभाध्यक्ष श्री चंद्रेश्वर प्रसाद सिंह, विशिष्ट अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के माननीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हनुमान सरावगी, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी, स्वागताध्यक्ष श्री धर्मचन्द जैन रारा, पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री वासुदेव बुधिया, पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया, निवर्तमान अध्यक्ष श्री भागचन्द पोद्दार, प्रान्तीय महामंत्री श्री कमल कुमार केडिया के मंच पर स्थान ग्रहण करने के पश्चात उद्घाटन सत्र की कार्यवाही आरंभ हुई। उद्घाटन सत्र का मंच संचालन स्वागत मंत्री श्री वेदप्रकाश अग्रवाल के जिम्मे था।

श्रीमती लिपिका गाड़ोदिया, श्रीमती वासुधा गाड़ोदिया एवं श्रीमती निशा बंका द्वारा संयुक्त रुप से प्रस्तुत गणेश वंदना से उद्घाटन सत्र का श्री गणेश हुआ। इससे पूर्व मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथियों तथा अन्य मंचासीन महानुभावों ने दीप प्रज्जवलित किया तथा डा० राम मनोहर लोहिया के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

स्वागताध्यक्ष श्री धर्मचन्द जैन रारा ने अपने स्वागत भाषण के क्रम में अतिथियों, प्रतिनिधियों तथा सभी उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। निवर्तमान अध्यक्ष श्री भागचन्द पोद्दार ने अपने उद्घाटन में अपने कार्यकाल की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

प्रान्तीय अध्यक्ष श्री विनय सरावगी ने अपने भाषण में सम्मेलन के उद्देश्यों तथा प्रान्तीय सम्मेलन के भावी कार्यक्रमों की विस्तार से चर्चा की और कहा कि उनके कार्यकाल के दौरान संगठन को मजबूत करने के साथ-साथ समाज उत्थान से जुड़े

विभिन्न कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया जायेगा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा उद्घाटन समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री नंदलाल रुंगटा ने समाज के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का उल्लेख करते हुए एकजुट होकर इनके समाधान हेतु प्रयास का आग्रह किया। श्री रुंगटा ने अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति लगाव रखने का आग्रह किया।

विधानसभा अध्यक्ष श्री चंद्रेश्वर प्रसाद सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि मारवाड़ी समाज के लोग जहां भी गये हैं, उन्होने अपनी अलग पहचान छोड़ी है। उन्होंने कहा कि अन्य समाजों को भी मारवाड़ी समाज के कार्यों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

तत्पश्चात अपने कार्यक्षेत्रों में विशिष्ट योगदान हेतु दैनिक 'उदितवाणी' जमशेदपुर के सम्पादक श्री राधेश्याम अग्रवाल (पत्रकारिता) तथा गिरिडीह के सितार वादक बंधुओं मोर मुकुट केडिया तथा मनोज केडिया को (कला) समाज गौरव सम्मान से मुख्य अतिथि माननीय मुख्यमंत्री श्री शिबू सोरेन के हाथों सम्मानित किया गया। माननीय मुख्यमंत्री ने श्री वेद प्रकाश अग्रवाल द्वारा सम्पादित स्मारिका का भी विमोचन किया।

सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। प्रान्तीय महामंत्री श्री कमल कुमार केडिया के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात उद्घाटन सत्र की कार्यवाही समाप्त हुई।

खुला सत्र

भोजन अवकाश उपरांत खुले सत्र का आयोजन हुआ। मंच पर प्रान्तीय सम्मेलन के अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों ने स्थान ग्रहण किया । खुले सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुंगटा तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हनुमान सरावगी विशेष रुप से उपस्थित थे। सर्वप्रथम समाज से जुड़े विभिन्न विषयों पर प्रस्ताव रखे गये, जिन्हें विस्तुत चर्चा तथा कतिपय संशोधनों के साथ सर्वसम्मति से पारित किया गया। इन प्रस्तावों पर चर्चा के दौरान उपस्थित प्रतिनिधियों ने संगठन, शिक्षा, राजनीति में भागीदारी जैसे विषयों पर विचार व्यक्त किये। प्रस्तावों के अलावा भी प्रतिनिधियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

समापन समारोह

अल्प विश्राम के पश्चात अधिवेशन का समापन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें केन्द्रीय मंत्री श्री सुबोधकांत सहाय, मुख्य अतिथि तथा पूर्व मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल मरांडी तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हनुमान सरावगी विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित थे।

विशिष्ट अतिथि श्री हनुमान सरावगी ने अपने उद्बोधन में बदलती परिस्थितियों में समाज की भूमिका का उल्लेख किया और संगठन सम्बंधी अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

समापन समारोह का संचालन श्री प्रदीप बाकलीवाल ने किया। समापन समारोह तथा साथ ही अधिवेशन का समापन स्वागत मंत्री श्री वेद प्रकाश अग्रवाल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुई।

स्वागताध्यक्ष श्री धर्मचन्द जैन रारा तथा स्वागत मंत्री श्री वेदप्रकाश अग्रवाल ने सम्पूर्ण स्वागत समिति की ओर से आये हुए प्रतिनिधियों, स्थानीय समाज बंधुओं, स्वागत समिति के सदस्यों, मीडियाकर्मियों तथा सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रस्ताव संख्या - १

प्रस्तावना -

आज के इस औद्योगिक, वैज्ञानिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्पर्धा के युग में शिक्षा का विशेष महत्व है।

समाज के नवयुवक एवं युवतियां, शिक्षा, प्रशासनिक सेवा, व्यवसाय एवं नये रोजगार सृजन के क्षेत्र में द्रुतगति से आगे बढ़ रहे हैं। झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन इस पर संतोष व्यक्त करता है।

प्रस्ताव -

(क) झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन समाज से अनुरोध करता है कि बच्चों को उच्च शिक्षा एवं उनके सर्वांगीण विकास के लिये एक संकल्प के साथ आगे बढ़ें।

(ख) समाज के मेधावी एवं जरुरतमंद छात्रों की उच्च शिक्षा के लिये एक छात्रवृति कोष की स्थापना की जाए ताकि समाज का सर्वांगीण विकास हो सके।

प्रस्तावक :: गोबर्धन प्रसाद गाड़ोदिया

प्रस्ताव संख्या - २

प्रस्तावना -

राजस्थानी देश की समृद्ध भाषाओं में से एक है जिसे प्रारंभ से ही साहित्यिक मान्यता प्राप्त है। राजस्थानी भाषा का अत्यन्त पुरातन इतिहास है और साहित्य की सभी विधाओं में इसकी उपलब्धता है। राजस्थानी भाषा लगभग १० करोड़ लोगों की मातृभाषा है और देश के प्राय: सभी हिस्सों में बोली जाती है किन्तु अभी तक इसे संवैधानिक मान्यता नहीं दी गई है जबकि औपचारिक रुप से मान्यता दिये जाने से सम्बन्धित घोषणायें होती रहीं है। राजस्थान विधान सभा द्वारा भी इसके लिये सर्व सम्मति से संकल्प पारित किया गया था एवं दिनांक

१६.०३.२००७ को तत्कालीन गृहमंत्री शिवराज पाटील ने भी इस पर केन्द्रीय सरकार की सहमति व्यक्त की थी परन्तु अभी तक वह क्रियान्वित नहीं हो पाया है।

प्रस्ताव –

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने चतुर्थ अधिवेशन के अवसर पर केन्द्रीय सरकार से माँग करता है कि राजस्थानी भाषा को तत्काल प्रभाव से संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कर इसे संवैधानिक मान्यता दे।

प्रस्तावक : श्री रतनलाल बंका

प्रस्ताव संख्या – ३

प्रस्तावना –

संगठन –**''संघे शक्ति कलियुगे''**– का नियम अभी भी प्रासंगिक है। समाज को अपना अस्तित्व बनाये रखने एवं समाज के सर्वांगीण विकास के लिये अपनी समर्थता एवं संगठनात्मक शक्ति बनाये रखना अपरिहार्य है। समाज से सम्बंधित किसी भी विपरीत परिस्थिति के समय संगठन की महता का आभास होता है ।

प्रस्ताव –

सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का संगठन सम्पूर्ण झारखण्ड के हर नगर एवं ऐसे ग्राम, जिनमें मारवाड़ी परिवार रहते हो, बनाया जाय।

प्रस्तावक :: श्री राजकुमार केडिया

प्रस्ताव संख्या – ४

प्रस्तावना –

जीवन पर्यन्त आयोजित होने वाले वैदिक संस्कारों में का एक विशिष्ट स्थान है।

प्रस्ताव –

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन अपने चतुर्थ अधिवेशन में सर्वसम्मति से निर्णय लेता है कि समाज के सभी सदस्य वैवाहिक एवं अन्य सामाजिक समारोहों संस्कारों के आयोजनों को सादगी, सुरुचिपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में सम्पादित करें एवं ऐसे आयोजनों में वैभव का प्रदर्शन यथासंभव न करें।

प्रस्तावक : श्री भागचंद पोद्दार

प्रस्ताव संख्या – ५

प्रस्तावना –

अपना देश भारत एक सर्वभोम गणतंत्र देश है जिसमें सत्ता राजनीति के माध्यम से प्राप्त की जाती है। राजनीति ऐसी धुरी है जो समाज की हर विधा को प्रभावित करती है। अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये राजनीति में अपना स्थान बनाये रखना अपरिहार्य है।

प्रस्ताव –

झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन में यह निर्णय लिया गया है कि समाज के जो सदस्य राजनीति में रुचि रखते हों उन्हें राजनीति में अपनी सहभागिता एवं सक्रियता बढ़ानी चाहिए जिससे कि समाज की राजनीति में पकड़ बनायी जा सके। साथ ही समाज के सभी सदस्यों से अनुरोध करता है कि समाज का यदि कोई व्यक्ति किसी भी राजनैतिक दल से जुड़ना चाहता है तो उसे सभी प्रकार का सहयोग करे।

प्रस्तावक : श्री धर्मचन्द बजाज

प्रस्ताव संख्या – ६

प्रस्तावना –

राष्ट्र के लिये विशिष्ट कार्य करनेवाले महापुरूषों को उनके जीवनकाल या मरणोपरान्त उनकी सेवाओं का स्मरण करने एवं उनके आदर्शों का अनुसरण के लिये प्रेरित करने हेतु केन्द्रीय

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Over-night travel bag worth Rs. 360/-

OR

Books with every 1 year subscription

Travel bag + Books worth Rs. 1080/-

OR

Books worth Rs. 1080/- with every 3 years subscription

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	☐ Travel Bag + Books **OR** ☐ Books
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	☐ Over-night Travel Bag **OR** ☐ Books

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District: _____

State: _____ Country: _____ Pin Code : _____

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :

Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **New Delhi :** Lala P. Yadav : 98102 10095
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 98416 54257 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 00860

सरकार द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मानों से सम्मानित किया जाता है, जिसमें ''भारत रत्न'' सर्वोच्च है।

प्रस्ताव -

डा० राममनोहर लोहिया ने राजनीति सूचिता में एक नई मिसाल कायम की । डा० लोहिया अपनी निर्भीक राय व्यक्त करने में कभी कोई संकोच नहीं करते थे। राष्ट्रपति महात्मा गाँधी एवं देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरु का वो बहुत सम्मान करते थे, परन्तु किसी विचार पर असहमत होने पर अपनी राय बेवाकी से व्यक्त करना उनके व्यक्तित्व का सबल पक्ष था।

(क) डा० लोहिया प्रखर समाजवादी, यर्थायवादी एवं मौलिक चिंतक थे। यह संयोग है कि इस वर्ष डा० लोहिया भी जन्म शताब्दी है। हमें इस बात पर गर्व है कि डा० लोहिया का जन्म मारवाड़ी समाज में हुआ था, इसलिये इस अधिवेशन का नामकरण डा० लोहिया के नाम पर किया गया है।

(ख) अंग्रेजों के शासन काल में कोई उद्योगपति ब्रिटिश सरकार का विरोध करते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन का समर्थन करे अकल्पनातीत था परन्तु घनश्यामदासजी बिड़ला ने इसे सम्भव कर दिखाया। बिड़लाजी के सहयोग के बिना राष्ट्रपिता का आन्दोलन अधूरा था। राष्ट्र के औद्योगिक विकास के कर्णधार एवं स्वतंत्रता आन्दोलन के पुरोधा स्व: बिड़लाजी को भारत रत्न से सम्मानित किया जाना चाहिये।

प्रस्ताव :

झारखण्ड मारवाड़ी सम्मेलन अपने चतुर्थ अधिवेशन में सर्व सम्मति से मांग करता है कि जन्म शताबदी वर्ष में डा० लोहिया की राष्ट्र के प्रति की गई सेवाओं के लिये उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया जाय।

झारखण्ड मारवाड़ी सम्मेलन अपने चतुर्थ अधिवेशन में सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित करता है कि स्व: घनश्यामदास बिड़ला को देश के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित किया जाय।

प्रस्तावक : श्री मुरलीधर केडिया

प्रस्ताव संख्या - ७

प्रस्तावना -

१५ नवम्बर २००० में बिहार प्रान्त का विभाजन हुआ, जिसमें एक प्रान्त बिहार रहा तथा दूसरा झारखण्ड बना। काफी प्रयास के बाद भी एकीकृत बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन की सम्पत्ति में झारखण्ड को अपना हिस्सा अभी तक नहीं मिला। इस हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के ऊपर दबाव बनाने की आवश्यकता है।

प्रस्ताव -

झारखण्ड प्रान्तीय सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन में सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन से अनुरोध किया जाय कि एकीकृत बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन की संपत्ति से झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन को बंटवारे का उचित हिस्सा अविलम्ब दिलाया जाय।

प्रस्तावक : श्री बसन्त मित्तल

◆

महत्वपूर्ण सूचना

सभी सदस्यों के ध्यानार्थ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रचारक अजय सिंह अब सम्मेलन के प्रचारक नहीं है, अत: उनसे किसी भी प्रकार के लेन-देन की जिम्मेदारी अब सम्मेलन की नहीं होगी।

●

बिना कच्ची रसीद प्राप्त किसी भी प्रचारक को नगद राशि का भुगतान न करें।

●

तीन माह में सम्मेलन कार्यालय के द्वारा पक्की रसीद न मिले तो हमें इसकी जानकारी जरूर दें।

-महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

स्थायी समिति की पंचम बैठक

सोमवार, १८ जनवरी २०१०
सम्मेलन कार्यालय, कोलकाता

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वर्तमान सत्र की स्थायी समिति की पंचम बैठक सोमवार, 18 जनवरी 2010 को सम्मेलन कार्यालय, 152बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-7 में हुई। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने बताया कि 14 साल बाद स्थायी समिति की बैठक सम्मेलन कार्यालय में हो रही है। आपने कहा कि गत तीन माह में नये सदस्य बनने की गति संतोषजनक नहीं है। इस मामले में प्रचारक भी सुस्त हैं। आपने राजनैतिक कार्यक्रम आयोजित करने के सम्बन्ध में कहा कि इस कमेटी के चैयरमेन श्री जुगल किशोर जैथलिया की सलाह के अनुसार राष्ट्रीय महामंत्री पश्तिम बंगाल प्रांत के साथ बातचीत करेंगे। आपने सम्मेलन के 1935 से वर्तमान तक के अध्यक्ष तथा महामंत्री की फोटो संग्रहित कर उन्हें एक ही तरह के फ्रेम में मढ़वाने तथा भविष्य में सम्मेलन कार्यालय में लगाने की मंशा जाहिर की। सम्मेलन के 75वें वर्ष में पूरे देश में 75 जोड़ों का सामूहिक विवाह करवाने की बात भी आपने कही। इसके अलावा इस वर्ष 7500 नये सदस्य बनाने हेतु आपने सबसे सहयोग मांगा। 75वें वर्ष में सम्मेलन के सभी सदस्यों को बैच देने पर विचार किये जाने की बात भी आपने कही। आपने कहा कि समाज के लोगों तक सम्मेलन की जानकारियां पहुंचाने के उद्देश्य से सम्मेलन की वेबसाईट बनाई जा सकती है। आपने समाज में व्याप्त दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची के साथ-साथ विवाह समारोह में बढ़ते मद्यपान, तलाक आदि पर चिंता जताते हुए इस पर अंकुश लगाने के लिए कारगर कदम उठाने पर बल दिया। आपने कहा कि समय के साथ हमें अपनी सोच बदलनी होगी।

बैठक में महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने सम्मेलन के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया तथा विगत बैठक की कार्यवाही पढ़ी जिसे सर्वसम्मत्ति से स्वीकार किया गया।

बैठक में उपस्थित सदस्यों के सामूहिक विवाह की जगह आदर्श विवाह को बढ़ावा दिया जाने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने, समाज में व्याप्त आडम्बर व दिखावा दूर करने हेतु साधु-सन्तों का सहयोग लेने, सेवा सम्बन्धी कार्यक्रम भी हाथ में लेने, मारवाड़ियों द्वारा संचालित संस्थाओं द्वारा वार्षिकोत्सव के नाम पर लाखों रुपये खर्च किये जाने की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने, सम्मेलन द्वारा मारवाड़ी समाज के अलावा अन्य समाज के लिए भी करने तथा मारवाड़ी बच्चों की नौकरी सुनिश्चित करने के हेतु कदम उठाने जैसे सुझाव दिये।

अंत में अध्यक्ष ने भारतवर्ष में ऐसी कोई जगह नहीं है जहां मारवाड़ी समाज का योगदान न हो। आपने कहा कि आदर्श विवाह के लिए लोगों को प्रेरित करने के लिए समाज विकास में अपील प्रकाशित की जायेगी।

अंत में पश्चिम बंगाल के पूर्व मुख्यमंत्री श्री ज्योति बसु के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। ◆

सूचना

सदस्यों की डायरेक्टरी 31 मार्च 2010 तक प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। जिन सदस्यों ने अभी तक फार्म नहीं जमा दिया हो, से पुन: अनुरोध है कि वे अपना फार्म जल्द से जल्द जमा कराने की कृपा करें।

-रविन्द्र कुमार लड़िया, संयोजक

कुछ लोग कहते हैं जिन्दा रहे, तो फिर मिलेंगे
हम कहते हैं मिलते रहेंगे, तो जिन्दा रहेंगे

होली पर हंसो

श्री नन्दकिशोर जालान
श्री नन्दलाल रुंगटा
श्री सीताराम शर्मा
श्री मोहनलाल तुलस्यान
श्री हरिशंकर सिंहानिया
श्री हनुमान प्रसाद सरावगी
श्री रतन शाह
श्री भानीराम सुरेका
श्री हरि प्रसाद कानोड़िया
श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल
श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया
श्री राज के पुरोहित
श्री ओंकार मल अग्रवाल
श्री बालकिशन गोयनका
श्री गणेश प्रसाद कन्दोई
श्री राम अवतार पोद्दार
श्री आत्माराम सोंथलिया
श्री ओम प्रकाश पोद्दार
श्री संजय हरलालका
श्री अरुण गुप्ता
श्री सतीश देवड़ा
श्री संतोष जैन
श्री शंभु चौधरी
श्री प्रेमचन्द सुरेलीया
श्री धर्मचन्द अग्रवाल
श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल
श्री नवल जोशी
श्री प्रदीप ढेढीया
श्री सूर्यकरण सारस्वा
श्री सुभाष मुरारका
श्री रामदयाल मस्करा
श्री मौजीराम जैन
श्री राम गोपाल अग्रवाल 'सूर्य'
श्री बालकृष्ण दास मुन्दड़ा
श्री हरिकृष्ण चौधरी
श्री साधुराम बंसल
श्री इन्द्रचन्द्र संचेती
श्री हरि प्रसाद बुधिया
श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल
श्री श्रवण दोती
श्री द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल
श्री एन.जी. खेतान

प्रेरक
कर्मठता
कौस्तुभ जयंती
कोई नहीं सुनता
पद्म विभूषण
अमृतोत्सव
हम किसी से कम नहीं
दर्दे दिल
कर लो दुनिया मुट्ठी में
हाजिर हूँ
बात पते की
अगली बार
ट्रस्टी
मानव सेवा
हाजिर हूं
महामंत्री जी
राउरकेला से गुवाहाटी तक
सामूहिक विवाह
कोल्हू का बैल
कुछ मजा नहीं आ रहा है
दिल्ली का चाकर
आस्था
सम्पादकाचार्य
हर दिल अजीज
अब सुषमा का सहारा है
रोटरी गर्वनर
राजनीति का असमंजस
फूलों की होली
न उधो का लेना, नमाधो का देना
मैं हूं ना
कलकत्ता बसने की तैयारी
हितैसी
गौमाता
हरमोनिया
ग्रामोद्धार
अभिभावक
ग्रास रूट
फ्रेंड्स ऑफ विक्टोरिया
यह आराम का मामला है
शोकाकुल
अजातशत्रु
माई लार्ड

श्री एन.आर. गोयनका
श्री रामनाथ झुनझुनवाला
श्री सुनील कुमार डागा
श्रीकृष्ण खेतान
श्री नथमल केडिया
श्री राजेन्द्र बच्छावत
श्री कुंज बिहारी अग्रवाल
श्री श्याम सुन्दर बगड़िया
श्री गिरधारी लाल जगतरामका
श्री रामनिवास चोटिया
श्री नारायण जैन
श्री सावरमल भीमसरिया
श्री बाबूलाल धनानिया
श्री बालकृष्ण माहेश्वरी
श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग
श्री ललित सकलचन्द्र गांधी
श्री विजय कुमार मंगलुनिया
श्री रविन्द्र कुमार लडिया
श्री कैलाश मल दूगड़
श्री विजय कुमार गोयल
श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया
श्री सोम प्रकाश गोयनका
श्री विजय गुजरवासिया
श्री पन्ना लाल वैद (दिल्ली)
श्री पवन कुमार गोयनका (दिल्ली)
श्री कमल नोपानी (बिहार)
श्री सुरेन्द्र लाठ (उड़ीसा)
श्री श्याम सुन्दर हरलालका (असम)
श्री विनय सरावगी (झारखण्ड)
श्री रामगोपाल बागला
श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया
श्री डा. जयप्रकाश मूंधड़ा
श्री चिरंजीलाल अग्रवाल
श्री संतोष सराफ
श्री सज्जन भजनका
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल
श्री मामराज अग्रवाल
श्री विशम्भर दयाल सुरेका
श्री बासुदेव प्रसाद बुधिया
श्री जुगल किशोर जैथलिया
श्री गीतेश शर्मा
श्री रघु मोदी

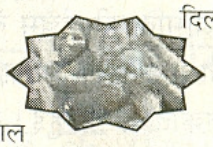

पीओ और जिओ
जन सम्पर्क
चाय मेरी जान
दिल अभी भी जवान है
हास्योजस्वा
कैश किंग
न तीन में न तेरह में
मस्ती
जय सीताराम
एवररेडी
चुनाव की तैयारी
रेड वाइन
हरियाणा की जय
लोग मतलबी हो गये
संगठन
साथ-साथ
बहुत कुछ करना है
डायरेक्टरी
हायर परचेज
हैदराबाद की दौड़
स्टीलमैन
मिर्च-मसाला
नई नवेली दुलहन
नेतृत्व
कार्यकर्ता
सही चयन
संगठन पर जोर
संविधान ज्ञाता
मारवाड़ी संस्कृति
फिर मंत्री बना
समाज सेवा
जीत-हार लगी रहती है
वृहत्तम
प्लाईवुड जरूरी है
पांचों अंगुली घी में
चौटालाजी जय
लक्षमण का गढ़
एक शख्स कहानी सा
वित्त मंत्री
फिर कमल खिला
परदेशी
कैश फ्लो

श्री बी.के. पोद्दार	राग-दरबार
श्री बालकृष्ण डालमिया	बैठे दिल
श्री बसंत कुमार नाहटा	चाय पत्ती
श्री महेश कुमार सहारिया	असम की दौड़
श्री पद्म कुमार अग्रवाल	श्याम बाबा की जय
श्री पी.के. लीला	सुटेड-बुटेड
श्री पवन जैन	आशिरी
श्री महावीर नारसरिया	पुराना घर
श्री राजेश खेतान	दिल्ली पर नजर
श्री कमल गांधी	वो भी क्या दिन थे
श्री हर्ष नेवटिया	गुलाब बाड़ी
श्री हरिमोहन बांगड़	मेरा नाम हरिमोहन है
श्री पुष्कर लाल केडिया	सेवा भावी
श्री अजय रुंगटा	गॉड फादर
श्री जे.पी. चौधरी	रेलगाड़ी दौड़ रही है
श्री संजय बुधिया सीनियर	हर दिल अजीज
श्री राधेश्याम गोयनका	श्री श्री
श्री रवि पोद्दार	समाजसेवी
श्री महेन्द्र जालान	ऊंची छलांग
श्री श्यामलाल डोकानिया	दान सबसे बड़ा धर्म है
श्री बनवारी लाल सोती	दरियादिल
श्री मुकुन्द राठी	परचम फहरा रहा है
श्री गोविन्द राम धानेवाल	सेवा परमोधर्म
श्री विश्वनाथ भुवालका	जैन्टलमैन
श्री ओम लड़िया	समाज सुधार
श्री जयगोविन्द इन्दौरिया	कोलकाता से दिल्ली
श्री जुगल किशोर सराफ	किंग मेकर
श्री कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला (कोलकाता)	नीली आंखें
श्री जयकुमार रुसवा	हंसना मना है
श्री प्रकाश अग्रवाल (विश्वमित्र)	ज्ञानपीठ
श्री विवेक गुप्ता (सन्मार्ग)	सिरमौर
श्री कैलाश प्र. झुनझुनवाला, (पटना)	स्टेट बैंक
श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया (देवघर)	पुराना घी
श्री संतोष कु. अग्रवाल(अधिवक्ता)	नहले पे दहला
श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी (जबलपुर)	चुनाव चक्कर
श्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय (हैदराबाद)	कहाँ खो गये
श्री कमल नोपानी (पटना)	बढ़ते कदम
श्री धर्मचन्द जैन 'रारा' (रांची)	जय भोले
श्री रमेश कुमार गर्ग (जबलपुर)	चौटाला जी की जय
श्री रमेश कुमार बंग (हैदराबाद)	मनी ही मनी
श्री प्रकाश चण्डालिया	ऊँची सोच
श्री नन्द किशोर अग्रवाल	कॉमरेड
श्री राजकुमार बोथरा	जल वाहिनी
श्री केशरी कान्त शर्मा (राजस्थान)	राजस्थानी शब्दकोष
डॉ. मनोहर लाल गोयल (झारखंड)	मैं भी लिखता हूँ
श्री मनोज अग्रवाल	युवा साथी
श्री ताऊ शेखावाटी (राजस्थान)	हंसाते रहो
श्री अम्बू शर्मा (नैणसी)	चर्चा में
श्री परशुराम तोदी 'पारस'	समाज चिंता

श्री आत्माराम तोदी	जवां दिल
श्री अरुण मल्लावत	मेहनती
श्री नन्दलाल सिंघानिया	कानूनविद्
श्री सचिन शर्मा	लक्ष्मी तेरी जय जयकार
श्री संतोष कुमार हरलालका	एवरग्रीन
श्री विश्वनाथ सराफ	कर्मठ
श्री नीलमणि राठी	मुकुटमणि
श्री कैलाश पति तोदी	सम्पर्क बढ़ाना है.
श्री दिलीप गोयनका	नदारद
श्री विमल कुमार चौधरी	सफलता की सीढ़ी
श्री विरेन्द्र प्रसाद धोका (महाराष्ट्र)	जय मारवाड़ी
श्री मुकुन्द रूंगटा	भाईजी
श्री राजेश पोद्दार	स्याणो टाबर

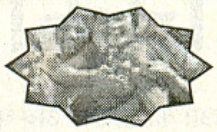

महिलाएं

श्रीमती प्रेमा पंसारी	सफलता की ओर
श्रीमती अरुणा जैन	काम करना है
श्रीमती विमला डोकानिया	मेती जिम्मेदारी
श्रीमती पुष्पा चोपड़ा	पुरस्कार
श्रीमती सुशीला चनानी	दो-चार छन्द
श्रीमती सरला माहेश्वरी	प्रखर वक्ता
श्रीमती मीना देवी पुरोहित	सर्व प्रिय
श्रीमती सुनीता झंवर	फिर मैदान में
श्रीमती कुसुम जैन	मेरी कविता

मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर शाखा द्वारा बच्चों को कम्बल तथा स्वेटर प्रदान

जनवरी माह में अत्यधिक सर्दी पड़ने के कारण शनिवार 2 जनवरी 2010 को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, (रजि.) शाखा कानपुर द्वारा संचालित बेसिक परिषद प्राथमिक विद्यालय, बिरहाना रोड, कानपुर में अध्ययनरत 70 बच्चों को बैठने हेतु कम्बल तथा बच्चों को स्वेटर प्रदान किये गये।

अध्यक्ष श्री सुशील कुमार तुलस्यान ने स्कूल में पढ़ रहे सभी बच्चों से शिक्षा के सम्बन्ध में जानकारी चाही और स्कूल के हेड मास्टर से कहा कि बच्चों की शिक्षा में कोई कमी न आने पाये।

संस्था से पत्राचार हेतु Email : marwarisammelan kanpur@gmail.com के ऊपर संस्था से पत्राचार किया जा सकता है।

बिहार की पुष्पा चोपड़ा को मिला जानकी देवी बजाज पुरस्कार

मुंबई। 'महिलाओं की पहचान अब बदल चुकी है और अब हमें अबला नहीं सबला कहा जाना चाहिए। मुझे दिया गया पुरस्कार इस बात का प्रमाण है कि बिहारी महिलाएं किसी से भी कम नहीं हैं', यह कहना है बिहार महिला उद्योग संघ की संस्थापिका श्रीमती पुष्पा चोपड़ा का। श्रीमती चोपड़ा को आईएमसी लेडीज विंग द्वारा जानकी देवी बजाज पुरस्कार से नवाजा गया। पुरस्कार के साथ तीन लाख रुपए की नकद राशि भी उन्हें सौंपी गई।

पटना निवासी श्रीमती चोपड़ा को यह पुरस्कार बिहार के ग्रामीण इलाकों में उनके द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए गए महत्वपूर्ण कार्य के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश की राज्यपाल प्रभा राव और पूर्व जस्टिस धर्माधिकारी भी मौजूद थे। 65 वर्षीया श्रीमती चोपड़ा ने जरूरत आंटरप्रेन्योरशिप को नई दिशा देते हुए चार दशक पहले उस बिहारी समाज में काम करना शुरू किया जहां अशिक्षा, गरीबी से लेकर वो सभी समस्याएं अपने कठिनतम रूप में उपस्थित थीं, जिनकी हम कल्पना कर सकते हैं। अचार-पापड़ और कला-शिल्प जैसे घरेलू और कुटीर उद्योगों के लिए गरीब महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने 1995 बिहार महिला उद्योग संघ की स्थापना की। संघ से आज तकरीबन 50,000 महिलाओं को रोजगार मिला है।

श्रीमती चोपड़ा 1978 से 1983 तक मारवाड़ी महिला मंच की प्रथम मंत्री रह चुकी हैं। इसके अलावा 1983 में अखिल भारतवींय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की प्रथम स्वागत मंत्री, 1987 से 1990 तक प्रथम प्रादेशिक अध्यक्षा तथा 1997 से 2010 तक बिहार महिला उद्योग संघ की संस्थापक अध्यक्षा रह चुकी हैं।

श्रीमती चोपड़ा के कार्यों की सराहना करते हुए महामहिम राव ने उनकी तुलना स्व. जानकी देवी बजाज से की। 24 साल की उम्र में पहली बार जानकी देवी से परिचय और ग्रामीण समाज की महिलाओं के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य को स्वयं देखने और सीखने के अनुभव को उपस्थित दर्शकों से बांटते हुए श्रीमती राव ने कहा, 'एक असाधारण महिला के नाम पर शुरू हुआ यह पुरस्कार अपनी सार्थकता को स्वयं बयान करता है।' महिलाओं की अगली आजादी की व्याख्या करते हुए इस अवसर पर जस्टिस धर्माधिकारी ने कहा, 'कभी जरूर पिंजरे में थीं महिलाएं, लेकिन आज ये पिंजरा खुला होने के बावजूद अधिकतर महिलाओं में उड़ने की चाहत नहीं दिखती। उन्हें आराम से जीने की आदत पड़ गई है। विदर्भ में किसान आत्महत्या नहीं करते अगर उनके घर की महिलाएं घरेलू उद्योग से जुड़ी होतीं। वक्त का तकाजा है कि सिक्योरिटी पर नहीं लिबर्टी पर जोर दिया जाए। जो महिलाएं लिबरल हुई भी हैं, वे आर्थिक रूप से भले ही आजाद हों, लेकिन अधिकारों के नाम पर अब भी गुलाम हैं। उन्हें पैसे को खर्च करने का अधिकार नहीं, कोई निर्णय लेने का अधिकार नहीं दिखता। सच्ची आजादी तभी है जब आप अपने निर्णय खुद ले पाएं। तभी होगा असली सशक्तिकरण।' आईएमसी लेडीज विंग की प्रेसिडेंट शीला कृपलानी ने श्रीमती चोपड़ा का अभिनंदन करते हुए मेहमानों का आभार व्यक्त किया।

तुलसी जैन 'आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य' पुरस्कार से सम्मानित

टिटिलागढ़ :- विश्व के महान दार्शनिक आचार्य श्री महाप्रज्ञ एवं युवाचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में राजस्थान के पड़िहारा ग्राम में गत 24 नवम्बर को ओड़ीसा के साहित्यकार श्री तुलसी जैन को जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा प्रतिष्ठित आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार 2000 प्रदान किया गया। सुराना चेरिटेबल ट्रस्ट, गौहाटी द्वारा प्रायोजित इस पुरस्कार के अन्तर्गत श्री जैन को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न एवं एक लाख रुपयों का चैक प्रदान किया गया। श्री जैन ने पुरस्कार राशि एक लाख रुपये जैन विश्व भारती को साहित्य सेवा हेतु विसर्जित करने की घोषणा की।

मारवाड़ी सम्मेलन कानपुर शाखा का 'शरद मेला'

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, (रजि.) शाखा कानपुर द्वारा भव्य 'शरद मेला' स्वागतम्-2010 का आयोजन रामकृपा श्यामकृपा, सिविल लाइन्स, कानपुर में किया गया। मेले का उद्घाटन विश्व जागृति मिशन के प्रधान श्री आर.पी. सिंह जी ने किया। मेले के मुख्य अतिथि माननीय श्री श्रीप्रकाश जायसवाल, केन्द्रीय कोयला राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) का प्रथम आगमन हुआ तथा विशिष्ट अतिथि श्री यदुपति सिंहानिया, उद्योगपति (जे.के. समूह) ने भी मेले में पधारे। उक्त दोनों अतिथियों ने संस्था द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अध्यक्ष श्री सुशील कुमार तुलस्यान ने श्री श्रीप्रकाश जायसवाल को, महामंत्री श्री सुनील कुमार मुरारका ने श्री यदुपति सिंहानिया को तथा संयोजक ने श्री सोम प्रकाश गोयनका-प्रादेशिक अध्यक्ष को दुशाला तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर सम्मेलन द्वारा कानपुर के 21 समाजसेवी तथा गणमान्य महानुभावों को केन्द्रीय कोयला मंत्री द्वारा दुशाला तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

मेले में इस्कान मन्दिर, बिठूर द्वारा आकर्षक भजन प्रस्तुत किया गया तथा जयपुर राजस्थान से पधारी सुप्रसिद्ध सुश्री निष्ठा अग्रवाल एण्ड पार्टी द्वारा प्रस्तुत राजस्थानी नृत्य ने मेले में समां बांध दिया। कलर्स टी.वी. कार्यक्रम के छोटे मियां के बाल कलाकार सिद्धार्थ गोयल द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम का लोगों ने भरपूर तालियां बटोरी। इस अवसर पर सम्मेलन के क्षेत्रीय विधायक श्री सलिल विश्नोई, श्री ओमप्रकाश डालमिया (रघुनाथ समूह) श्री विजय पाण्डेय, अध्यक्ष-कानपुर उद्योग व्यापार मण्डल ने उपस्थित होकर मेले की गरिमा बढ़ाई। मेले में खान-पान, गेम्स, सुन्दर-सुन्दर परिधानों के आकर्षक स्टाल लगाये गये।

संस्था के अध्यक्ष श्री सुशील कुमार तुलस्यान ने मेले में पधारे सभी आगन्तुक महानुभावों का स्वागत किया और संस्था द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों पर प्रकाश डाला।

मेले का संचालन श्री सत्येन्द्र महेश्वरी-प्रथम उपाध्यक्ष तथा श्री महेश कुमार भगत-द्वितीय उपाध्यक्ष ने किया।

संस्था के महामंत्री श्री सुनील कुमार मुरारका ने मेले में पधारे सभी महानुभावों एवं पत्रकार भाइयों के प्रति आभार व्यक्त किया।

मेले में श्री संजीव झुनझुनवाला, आलोकचन्द कानोड़िया, हरिओम तुलस्यान, सत्यनारायण नेवटिया, श्रीगोपाल तुलस्यान, संजय अग्रवाल, विश्वनाथ पारीक, महेशचन्द्र शर्मा, शिवरतन नेमानी, कमलेश गर्ग, संजय महेश्वरी, कमलेश केडिया, बालकृष्ण शर्मा, भजनलाल शर्मा, बलदेवप्रसाद जाखोदिया, जयकुमार डालमिया, हनुमानप्रसाद कानोड़िया, राकेश पोद्दार सहित अनेक गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

सम्मेलन द्वारा कानपुर नगर के निम्नलिखित 21 समाजसेवी तथा गणमान्य लोगों को अलंकृत उपाधि से सम्मानित किया गया

सम्मानित महानुभाव	अलंकृत उपाधि
01. माननीय श्री लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल	'समाज रत्न'
02. माननीय श्री नन्दकिशोर जी झाझरिया	'समाज रत्न'
03. माननीय श्री कृष्णगोपाल जी लाहोटी	'समाज रत्न'
04. माननीय श्री रूप किशोर जी गर्ग	'समाज रत्न'
05. माननीय श्री जुगुलकिशोर जी गर्ग	'समाज रत्न'
06. माननीय श्री ईश्वरचन्द्र जी गुप्ता	'नगर गौरव'
07. माननीय श्री पं. बद्रीनारायण जी तिवारी	'नगर गौरव'
08. माननीय श्री के.डी. गुप्ता जी	'नगर गौरव'
09. माननीय श्री राघवेन्द्र जी गर्ग (एडवोकेट)	'नगर गौरव'
10. माननीया श्रीमती मन्जू जी बांगड़	'आदर्श समाज सेविका'
11. माननीय डा. मोहनलाल जी चौधरी	'आदर्श समाज सेवी'
12. माननीय श्री जयकुमार जी डालमिया	'आदर्श समाज सेवी'
13. माननीय श्री सन्तोष जी अग्रवाल (एडवोकेट)	'आदर्श पुरुष'
14. माननीय श्री कृष्णकुमार जी अग्रवाल (मुन्ना बाबू)	'आदर्श पुरुष'
15. माननीय श्री गजानन्दजी अग्रवाल	'आदर्श पुरुष'
16. माननीया श्रीमती मन्जूजी भाटिया	'सत्य प्रेरणादात्री'
17. माननीय पं. रामजी त्रिपाठी	'प्रेरणा पुरुष'
18. माननीय श्री मनोज जी सेंगर	'प्रेरणा पुरुष'
19. माननीय श्री विश्वनाथ जी गुप्ता	'सेवा भावी'
20. माननीय श्री महावीरप्रसादजी गोयल	'सेवा भावी'
21. माननीय श्री किशन जी सरावगी	'सेवा भावी'

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा अग्निकाण्ड पीड़ितों की सहायता

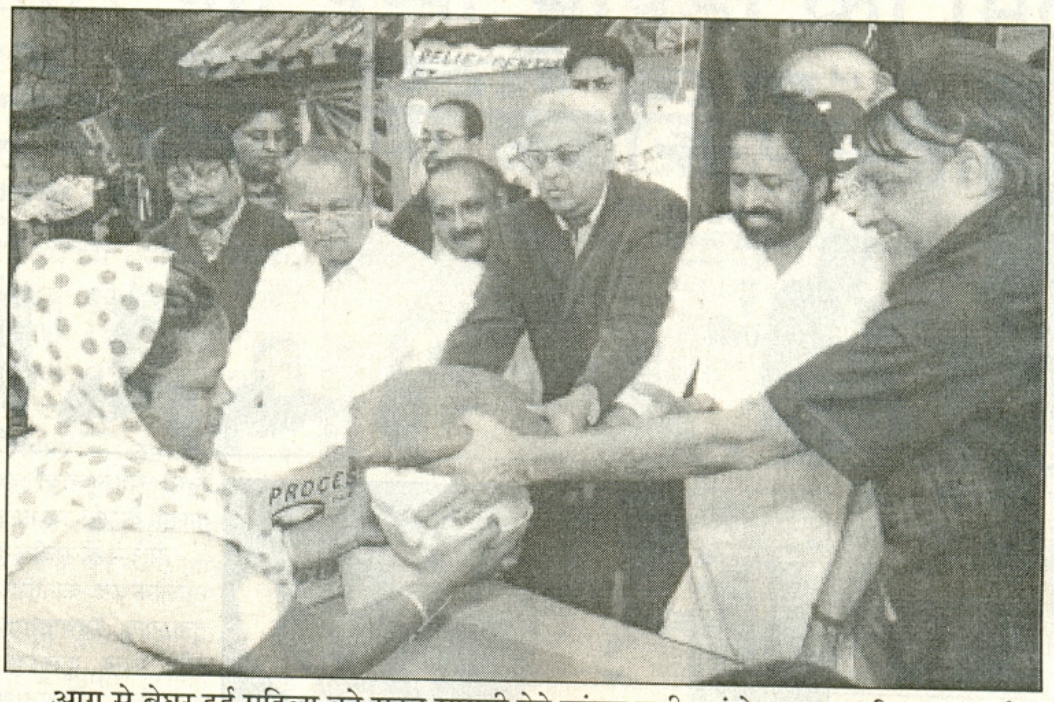

आग से बेघर हुई महिला को राहत सामग्री देते सांसद सुदीप बंदोपाध्याय, सीताराम शर्मा, रामअवतार पोद्दार, ओम प्रकाश पोद्दार, संजय हरलालका व अन्य।

आग से बेघर हुई एक महिला अपने बच्चों के साथ।

कोलकाता। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से 31 जनवरी को टेंगरा के खाल धार बस्ती के पास विगत दिनों लगी आग से बेघर हुए 125 परिवारों के बीच खाना बनाने का स्टोव वितरित किया गया। इस मौके पर सांसद सुदीप बंदोपाध्याय, सम्मेलन के निर्वतमान अध्यक्ष सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री द्वय ओमप्रकाश पोद्दार व संजय हरलालका उपस्थित थे। श्री बंदोपाध्याय ने कहा कि सम्मेलन ने बेघर हुए लोगों की सहायता हेतु हाथ बढ़ाकर सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि जिन चेहरों पर शोक दिखाई दे रहा था आज उनके चेहरों पर खुशी देखकर आत्मिक शांति का अनुभव हो रहा है। श्री शर्मा ने कहा कि सम्मेलन ने बिहार की बाढ़ हो या पश्चिम का आयला तूफान सब समय सहायता का हाथ बढ़ाया है।

मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन का सेवा कार्य

मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन द्वारा दी जा रही राहत सामग्री को लेने हेतु कोलकाता के टेंगरा में उमड़ी अग्निकाण्ड प्रभावितों की भीड़।

कोलकाता। मारवाड़ी सम्मेलन फाउण्डेशन द्वारा 31 जनवरी को टेंगरा के खाल धार बस्ती के पास लगी आग से बेघर हुए परिवारों के बीच राहत सामग्री वितरित की गई। इस मौके पर उपस्थित सांसद सुदीप बंदोपाध्याय ने कहा फाउण्डेशन के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। फाउण्डेशन के ट्रस्टी श्री सीताराम शर्मा भी इस मौके पर उपस्थित थे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन में झंडोत्तोलन

कोलकाता। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित भवन में गणतंत्र दिवस पर निर्वतमान अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने झंडोत्तोलन किया। इसके पश्चात् राष्ट्रगान हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार ने सभी का स्वागत किया। श्री शर्मा ने कहा कि गणतंत्र की वजह से भारत मजबूत है। अन्यथा पड़ोसा देशों में आये दिन सैनिक और खूनी क्रांति होती रहती है। इस मौके पर संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री ओमप्रकाश पोद्दार व संजय हरलालका, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया सहित जुगल किशोर जैथलिया, विजय गुजरवासिया, गोविन्द शर्मा, रामनिवास चोटिया, रामगोपाल बागला, डूंगरमल सुरेका सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

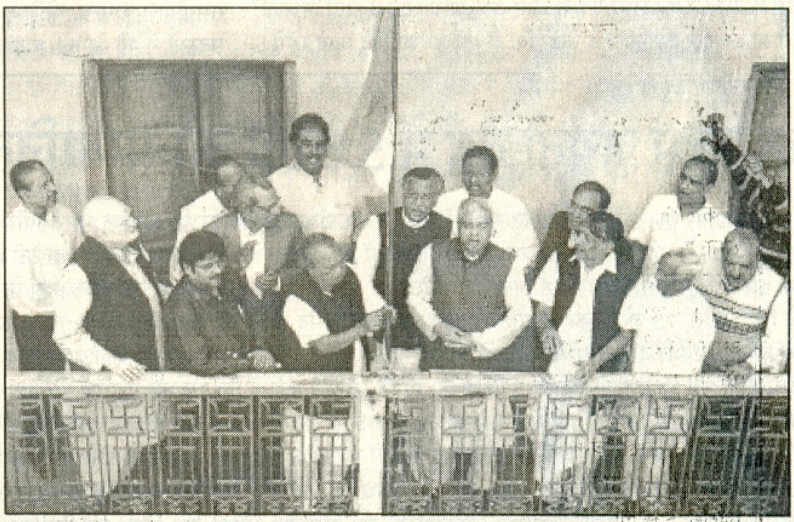

झंडोत्तोलन करते श्री सीताराम शर्मा के साथ श्री रामअवतार पोद्दार, श्री आत्माराम सोंथलिया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री गोविन्द शर्मा व अन्य।

सम्मेलन ने दी रामनिवास मिर्धा को श्रद्धांजलि

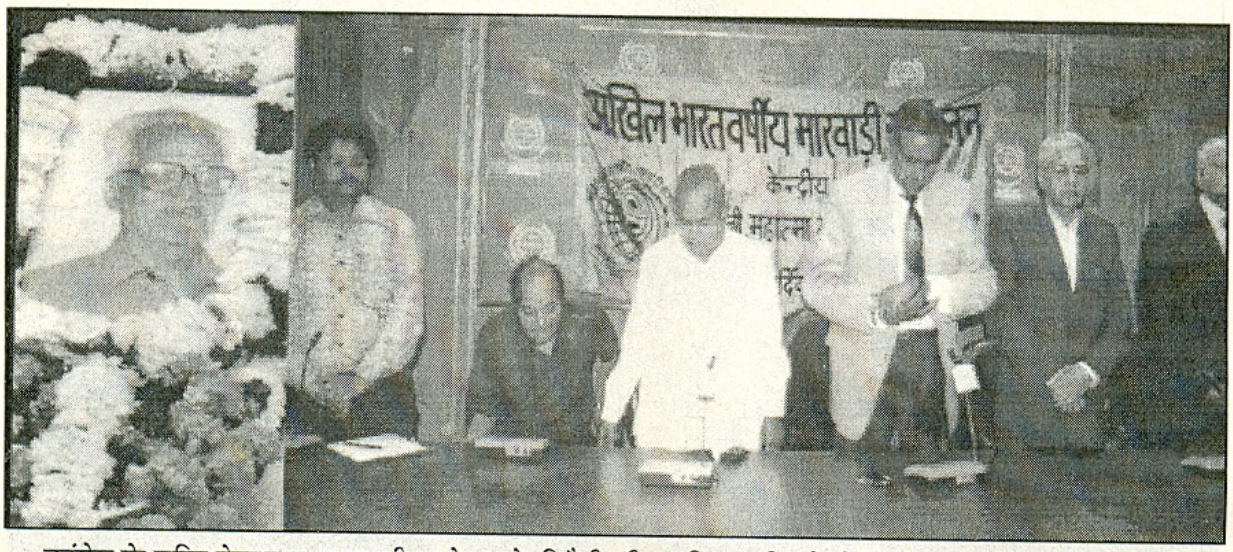

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता तथा मारवाड़ी सम्मेलन के हितैषी श्री रामनिवास मिर्धा को श्रद्धांजलि देते श्री नंदलाल रुँगटा, श्री सीताराम शर्मा, श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री संजय हरलालका

कोलकाता। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा पूर्व केन्द्रीय मंत्री, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, राज्यसभा के पूर्व उपाध्यक्ष तथा मारवाड़ी सम्मेलन के हितैषी श्री रामनिवास मिर्धा के निधन पर शोक सभा का आयोजन मर्चेन्ट चेम्बर ऑफ हाल, १५बी, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कोलकाता में किया गया। शोक सभा की अध्यक्षता श्री नन्दलाल रुँगटा ने की। उपस्थित सदस्यों द्वारा मिर्धाजी की फोटो पर पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने मिर्धाजी के साथ अपने संस्मरणों को याद करते हुए कहा कि उनमें कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें आगे बढ़ाने की अद्‌भुत क्षमता थी। समाज की प्रत्येक विषम परिस्थितियों में उन्होंने सम्मेलन का साथ दिया। उनकी सोच राजनीति के उपर थी। ऐसे व्यक्तित्व का चला जाना देश के साथ-साथ सम्मेलन के लिए अपूरणीय क्षति है। पूर्व अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान ने कहा कि वे हमें हमेशा याद आते रहेंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि वे एक निष्पक्ष राजनेता तथा कर्मठ कार्यकर्ता थे। मारवाड़ी समाज के लिए वे संकटमोचक थे। मेरी प्रथम मुलाकात में ही मैं उनसे काफी प्राभावित हुआ था। उनका बड़प्पन था कि वे सम्मेलन को दिशा निर्देश देते थे। उनके बताये रास्ते पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इसके अलावा उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री जुगलकिशोर जैथलिया, हिन्दुस्तान क्लब के अध्यक्ष जी.पी. काजड़िया, निर्मल भूतोड़िया, बंशीलाल बाहेती आदि ने भी वक्तव्य रखा। शोक सभा का संचालन संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका ने किया। इस मौके पर राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त महामंत्री ओम प्रकाश पोद्दार, विजय गुजरवासिया, गोविन्द शर्मा, जे.पी. अग्रवाल, विश्वनाथ सराफ, रामगोपाल बागला, गोविन्द अग्रवाल, मनोज अग्रवाल सहित अन्य सदस्यों ने भी अपनी श्रद्धांजलि दी।

कौस्तुभ जयंती वर्ष में 5 लोगों को सम्मानित करेगा सम्मेलन

कोलकाता। ७५ वर्ष पूर्व स्थापित मारवाड़ियों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के कौस्तुभ जयंती समारोह कमेटी की प्रथम बैठक बंगाल रोईंग क्लब में हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए कमेटी के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि इस वर्ष पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना है। उन्होंने बताया कि कोलकाता के आमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित सम्मेलन भवन के शिलान्यास, 75 जोड़ों का सामूहिक विवाह, 75 जरूरतमंद छात्रों को छात्रवृत्ति, शिक्षा, खेल, समाजसेवा, लेखन आदि क्षेत्र में ख्याति अर्जित करने वाले देश के पांच व्यक्तियों को सम्मानित करने की योजना है। इसके अलावा कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल को आमंत्रित किया जा रहा है। आपने बताया कि इस वर्ष गुजरात, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तरांचल प्रांत का गठन करने की दिशा में कदम उठाये जा रहे हैं तथा पूरे देश में ७५०० नये सदस्य बनाने हेतु सदस्यता अभियान चल रहा है। इस वर्ष सम्मेलन के ७५ वर्षों का इतिहास पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की योजना है तथा भारत सरकार से अनुरोध किया जायेगा कि इस मौके पर वह डाक टिकट जारी करे। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुँगटा ने कहा कि सम्मेलन की अपनी वेबसाईट शुरू की जायेगी जिसमें सम्मेलन से सम्बन्धी समस्त जानकारियों का समावेश होगा। इस मौके पर उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया, महामंत्री रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त महामंत्री संजय हरलालका, पूर्व महामंत्री भानीराम सुरेका, द्वारका प्रसाद डाबड़ीवाल, कैलाशपति तोदी सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन की 'बढ़ते तलाक - चिंता एवं चिंतन' विषय पर संगोष्ठी

बढ़ते तलाक का कारण सहनशीलता में कमी

– सीताराम शर्मा

बाएं से दाएं - गोष्ठी में उपस्थित श्री प्रदीप जीवराजका, श्रीमती सरोज तुलस्यान, श्री रामअवतार पोद्दार, श्री सीताराम शर्मा, श्री नंदलाल सिंहानिया, सुश्री पुजारिनी पाल, श्री कैलाशपति तोदी

कोलकाता। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सामाजिक कुरीतियां दूर करने एवं समाज में जागरुकता लाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज सायं दी कलकत्ता ट्रामवेज कम्पनी हॉल में 'बढ़ते तलाक - चिंता एवं चिंतन' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में एक स्वर में यह बात उभर कर आई कि युवा पीढ़ी में सहनशीलता की कमी की वजह से तलाक बढ़ रहे हैं। सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि तलाक के लिए एक ओर जहां पारिवारिक व सामाजिक कारण जिम्मेवार हैं वहीं युवा पीढ़ी में सहनशीलता का ह्रास होना एक मुख्य कारण है। उन्होंने कहा कि संयुक्त परिवार रहने से सहन करने की शक्ति आती है। किन्तु आजकल एकल परिवार हो गये हैं जहां छोटी सी बात पर सहन शक्ति जवाब दे देती दै और नौबत तलाक की आ जाती है। उन्होंने कहा कि तलाक रोकने हेतु न्यायपालिका ने तो कदम उठाने शुरु कर दिये हैं। तलाक को अंतिम विकल्प बताते हुए आपने कहा कि मारवाड़ी सम्मेलन का कार्य अपनी खामियों पर चिंतन करना है। इसके पूर्व विषय प्रवर्तन करते हुए कानूनविद् श्री नंदलाल सिंहानिया ने कहा कि युवा पीढ़ी के सिर्फ शिक्षित होने एवं आर्थित रूप से सम्पन्न होने के कारण तलाक नहीं हो रहे हैं बल्कि अब हमारे में सहन शक्ति का अभाव हो गया है। हाईकोर्ट के वकील प्रदीप जीवराजका ने कहा कि हमने अमेरिका अर्थव्यवस्था को अपनाया है तो उसके दुष्परिणाम भी हमें भोगने पड़ रहे हैं। आपने बच्चों में सही संस्कार देने पर जोर दिया। वकील श्रीमती सरोज तुलस्यान ने कहा कि ससुराल में लड़की को अपनापन नहीं मिल पाता है, उसकी भावना पर ध्यान नहीं दिया जाता है। भावना पर ठेस लगने पर वे टूट जाती हैं और अलगाव आने लगता है। इसके लिए आपसी सामंजस्य जरूरी है। वकील सुश्री पुजारिनी पाल ने कहा कि प्रेम विवाह में तलाक ज्यादा होते हैं। आपने कहा कि लड़की के ससुराल के मामले में लड़की के माता पिता की दखलंदाजी नहीं होनी चाहिए। आजकल लड़कियां शिक्षित और समझदार होती हैं इसलिए उन्हें ससुराल की समस्याओं पर भी स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए। इससे वे स्वयं को उस माहौल में ढाल लेंगी।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने स्वागत वक्तव्य दिया। संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री श्री संजय हरलालका ने संचालन तथा संयोजक श्री कैलाशपति तोदी ने धन्यवाद दिया। संयुक्त संयोजक श्री विष्णु पोद्दार भी उपस्थित थे।

पवन कुमार गोयनका अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन दिल्ली प्रदेश के सचिव नियुक्त

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री श्री पवन कुमार गोयनका को अखिल भारतीय वैश्य महा सम्मेलन दिल्ली प्रदेश का सचिव नियुक्त किया है।

लक्ष्मणगढ़ निवासी, दिल्लीवासी श्री गोयनका पेशे से वकील हैं। आप पूर्व में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, सेन्ट्रल दिल्ली मारवाड़ी युवा मंच के अध्यक्ष एवं दिल्ली मारवाड़ी युवा मंच के कोषाध्यक्ष रह चुके हैं।

अग्रसेन जयन्ती समारोह सम्पन्न

डा. आर. के. मोदी, अग्रसेन भवन के सचिव अमर कुमार अग्रवाल, स्वास्थ्य मंत्री बिहार सरकार, नन्द किशोर यादव, सहकारिता मंत्री बिहार सरकार गिरिराज सिंह, अखिल भारतीय वैश्य सम्मेलन, बिहार विधान पर्षद सत्तारूढ़ दल उपनेता गंगा प्रसाद चौरसिया।

पटना। अग्रसेन सेवा न्यास के तत्वावधान में अग्रसेन भवन, शक्तिधाम में दो दिवसीय अग्रेसन जयन्ती का मुख्य समारोह बड़े ही धूम-धूम से मानाया गया। समारोह का उद्घाटन बिहार सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री नन्द किशोर यादव ने महाराजा अग्रसेन के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया। श्री यादव ने कहा कि अग्रवाल वैश्य समाज का राष्ट्र निर्माण में अग्रणी योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि अग्रवाल समाज जब भी देश में किसी प्रकार का बाढ़, भूकम्प आदि विनाश के समय सहायता के लिए सबसे आगे रहता है। उन्होंने बताया कि आतंकवाद के खिलाफ भी सबसे पहली रैली अग्रवाल समाज ने निकाली। उन्होंने अग्रवाल समाज से बिहार के विकास हेतु सहयोग मांगा।

मुख्य अतिथि सहकारिता मंत्री श्री गिरीराज सिंह ने कहा कि अग्रवाल समाज के सहयोग के बिना कभी देश एवं राज्य की तरक्की की कल्पना नहीं की जा सकती। श्री सिंह ने कहा कि अग्रवाल समाज हमेशा गरीब एवं असहाय लोगों की मदद करने हेतु तत्पर रहता है। उन्होंने संस्था द्वारा चलाये जा रहे गरीबों एवं असहाय लोगों के लिए मुफ्त नेत्र शिविर, डायबीटिज, हृदय, दांत शिविर लगाने के लिए साधुवाद दिया।

विशिष्ट अतिथि बिहार वैश्य महासम्मेलन के अध्यक्ष व बिहार विधान परिषद में सत्तारूढ़ दल के उपनेता गंगा प्रसाद ने सभी वैश्य बंधुओं से अनुरोध किया कि वे अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें तथा वोट देने जरूर जाएं। विधायक गोपाल अग्रवाल ने कहा कि वैश्य अग्रवाल समाज को अपने सिद्धान्तों को याद करना चाहिए व एक होकर राजनीतिक दलों को अपनी संगठन शक्ति को दिखाना चाहिए।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत स्वागताध्यक्ष रमेश चन्द्र गुप्ता ने किया, मंच का संचालन कार्यक्रम संयोजक दीपक कुमार अग्रवाल ने किया। न्यास के सचिव अमर कुमार अग्रवाल ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा सरकार से राजधानी के किसी प्रमुख चौराहे पर अग्रसेन की आदमकद प्रतिमा लगाने की मांग की। उक्त अवसर पर प्रो. डी.पी. मैतीन, डा. आर.के. मोदी ने भी विचार व्यक्त किया।

उक्त अवसर पर न्यास की ओर से समाज सेवा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सर्वश्री प्रसाद खण्डेलवाल, नारायण प्रसाद जालान, प्रो. डा. विश्वनाथ अग्रवाल, नागरमल बाजोरिया, बनवारी लाल रूंगटा तथा 10वीं एवं 12वीं में उच्चतम अंक पाने वाले मेधावी बच्चों स्नेहा बागला 97.60 प्र., प्रज्ञा तुल्सयान 93 प्र., माधव बंका 92.33 प्र. को अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

समारोह में न्यास के सचिव अमर कुमार अग्रवाल ने अतिथियों को स्मृति चिह्न, दुशाला, पगड़ी देकर सम्मानित किया। अन्त में बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष पी.के. अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में डा. श्रवण कुमार ने सपत्नीक, स्वाति अग्रवाल, आदि ने राजस्थानी गीत पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया जिस पर उपस्थित दर्शक थिरकने पर मजबूर हुए। अन्त में डांडिया धूम में बेस्ट मेल ड्रेस, बेस्ट फीमेल ड्रेस, बेस्ट कपल ड्रेस तथा ग्रुप डांस के लिए पुरस्कृत किया गया। उपस्थित लोग डांडिया पर खूब नाचे तथा राजस्थानी गुजराती परिधान में भी कई लोग दिखे।

कार्यक्रम में अक्षय अग्रवाल, बजरंग अग्रवाल, रमेश मोदी, नन्द किशोर अग्रवाल, आत्माराम अग्रवाल, निर्मल अग्रवाल, गोपाल कृष्ण अग्रवाल, ध्रुव मुरारका, युगल पोद्दार, घनश्याम अग्रवाल, युगल किशोर चौधरी, प्रदीप पंसारी आदि ने सक्रिय भूमिका निभायी। अन्त में सभी ने प्रसाद ग्रहण किया। ◆

राजस्थानी साहित्य में रणभूमि

– ओंकार पारीक

सन्तान को जन्म से ही सिखाया जाता है कि वह अपने अधिकारों की रक्षा करे। जन्मभूमि के लिए यदि अपने प्राण भी त्यागने पड़े तो हंसते-हंसते न्यौछावर कर दें। माता बच्चे को पालने में झुलाते हुए कहती हैं कि- हे पुत्र, अपनी मातृभूमि को कभी शत्रु के हाथों मत सौंपना, उसकी रक्षा करते हुए ही जान देने में बड़ाई है। उसे खोकर जीना कोई जीना नहीं है।

राजस्थान हमेशा से वीर प्रसूता भूमि रही है। यहां की क्षत्राणियों ने अनगिनत वीर योद्धा महापुरुषों को जन्म दिया, जिनकी शौर्य गाथाओं के पन्ने भरे हुए हैं। वीर वसुंधरा में जन्म लेकर इस मरुभूमि को जहां धन्य कर रणक्षेत्र में अपने प्राण की आहूति दी, वहीं दूसरी ओर वीर धर्मपत्नियों ने भी असीम त्याग का विरल उदाहरण प्रस्तुत किया है। स्थानीय साहित्य में ये वीर क्षत्राणियां अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। अदम्य साहसी, मातृभूमि की रक्षा पर बलिदान देने के लिए जाने वाले अपने कलेजे के टुकड़े युवा पुत्र और सुहाग की हंसते-हंसते तिलक लगाकर शत्रु से लोहा लेने के लिए अपने कोमल हाथों से तलवार देते समय अपनी छाती को बज्र बना लिया और उन्हें विदा किया। नीचे लिखे कतिपय उदाहरणों से यह भलीभांति साबित हो जाता है कि राजस्थानी साहित्य में इन वीरांगनाओं के अनेकों किस्से और प्रसंग मौजूद हैं।

मां अपने सपूत को जन्म से ही शिक्षा देती है-

इला न देणी आपणी, हालरिये हुलराय,
पूत सिखावे पालणैं, मरण बड़ाई माय।

सन्तान को जन्म से ही सिखाया जाता है कि वह अपने अधिकारों की रक्षा करे। जन्मभूमि के लिए यदि अपने प्राण भी त्यागने पड़े तो हंसते-हंसते न्यौछावर कर दें। माता बच्चे को पालने में झुलाते हुए कहती हैं कि- हे पुत्र, अपनी मातृभूमि को कभी शत्रु के हाथों मत सौंपना, उसकी रक्षा करते हुए ही जान देने में बड़ाई है। उसे खोकर जीना कोई जीना नहीं है।

'दिन-दिन भोळी दीसतो, सदा गरीबी सूत'
काकी कुंजर काटता, जाण वियो जेठूत।

अर्थात्, पति रणभूमि में शहीद हो गया है। घर में विधवा पत्नी अपने मृत पति के बारे में काकी सास से पुरानी बातों को याद कर कहती है- हे काकी तेरा भतीजा भोला सा दिखाई देता था, पर हाथी को काटते वक्त उसकी वीरता का पता चला।

अलाउद्दीन खिलजी से लड़ने जाते वक्त बादल की मां उसकी छोटी उम्र की ओर ध्यान दिलाकर उसे युद्ध में जाने से रोकती है। वीर बादल अपनी मां को क्या जवाब देता है, आइए सुनें -

'मैनूं बालक क्यूं कहे, रोई न मांग्यो गास
जै खग मारूं सिंह-सार, तो कहिए शाबास।'

हे मां! तुम मुझे बालक क्यों कहती है? मैंने कब तुमसे रोकर रोटी मांगी? यदि मैं बादशाह के सिर पर तलवार चलाऊं, तब तू मुझे धन्य-धन्य कहना।

अब वीर पत्नियों को देखिए, पति को रणभूमि में भेजते वक्त तनिक भी नहीं घबराती, बल्कि उल्लास के साथ उसे सजाती और प्रोत्साहित करती है-

'पाछा फिर मत झांकज्यो पग मत दिज्यो टार,
कट भल जाज्यो खेत मैं, पर मत आज्यो हार।
भागै मत तू कंथड़ा, तुझ भागै मुझ खोड़,
मोरी संग सहेल्या, ताली दे मुख मोड़।'

अर्थात् हे प्रियतम! युद्ध में पीछे की तरफ मत देखना। पैरों को कभी न हटाना-रणक्षेत्र में भले ही कट जाना, परंतु हार कर कभी न आना। आगे वह कहती है- हे स्वामी! तुम भाग कर मत आना। तेरे भाग कर आने से मुझे लाज आएगी-मेरी सखियां मुंह मोड़कर और तालियां बजा-बजाकर मेरा मजाक उड़ाएगी।

फिर वह कहती है-

'कंथ लखीजै दोहिकुल, न थी फिरती छांह,
मूडियां मिलसी गींदबो, मिले न धणरी बांह!'

अर्थात् हे प्रियतम! दोनों कुल की ओर देखना, इस जीवन की परवाह मत करना, यह तो फिरती-घिरती छांह है-यदि तुम भागकर चले आए तो सोने के लिए तुम्हें तकिया अवश्य मिलेगा, पर कभी मेरी बाहों का सहारा नहीं मिलेगा। कायर पति की पत्नी कहती है-

'ओ सुहाग खाये लगै, जद कायर भरतार,
रंडायो लागी भलो, होय सूर सरदार।'

अर्थात् कायर पति के रहते मुझे अपना सुहाग कड़वा लगता है-विधवापन ज्यादा अच्छा है, यदि पति शूरवीर हो।

'वस्त्र कसूमल पहर लो, कसो कमर तलवार,
बरछी और कटार लै, हुवो तुरंग असवार।'

अर्थात् हे सैनिकों! केसरिया वस्त्र धारण कर लो, कमर में तलवारें बांध लो-हाथों में बरछियां और कटारियां ले लो और युद्ध के लिए घोड़ों पर सवार हो जाओ।

-फैंसी बाजार, गुवाहाटी
मो. 098649 18948

कविता

अपमान सहकर भी कुछ नहीं बोले

इस देश में सदैव ही
नारी को मिला है सम्मान
किंतु बेचारा पुरुष हो
या हो भगवान?
कुछ नहीं कहता है
चुपचाप अपमान सहता है
फिर न जाने लोग
क्यों कहते हैं कि नारी अबला है
हमने देखा तो नहीं लेकिन
विद्वानों से पता चला है और
चित्र में भी दिखाया जाता है
माँ पार्वती का रूप
जो दुर्गा माता है
करती है सिंह की सवारी
कितने अच्छे वस्त्र?
कितना अच्छा रूप?
शरीर पर अभूषण भी कितने भारी?
हाथ में भाला और
बेचारे शंकर भगवान के गले में
सर्पों की माला, पहनने को मृगछाला
सवारी करने को बैल
उनका आवास बर्फ से ढकी
ऊंची चोटी नाम कैलाश
इतने वस्त्र भी नहीं
जो शरीर को ढांपे अब बर्फ में
वो ठंड से कितना भी कांपें?
अपने आपको कैसे बचायेंगे?
भांग, धतूरा क्यों नहीं खायेंगे?
ऐसे हालात में तो बजा के डमरू
तांडव ही मचायेंगे
सिर्फ मृगछाला, शेष शरीर नंगा
माथे के ऊपर से निकाल दी गंगा
स्थिति ऐसी कि कोई भला, चंगा
पागल हो ले हमारे शंकरजी
ठहरे बाबा भोले
आज तक इतना अपमान
सहकर भी कुछ नहीं बोले।

- गौरीशंकर 'मधुकर'
पुरानी जेल सदर रोड
बीकानेर-5

सम्मेलन की कानपुर शाखा द्वारा नि:शुल्क 'स्वास्थ्य मेला 2009' आयोजित

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कानपुर शाखा द्वारा रविवार 20 दिसम्बर 2009 को श्यामा हेल्थ केयर, मेन रोड, लाल बंगला, कानपुर में विशाल नि:शुल्क 'स्वास्थ्य मेला 2009' का आयोजन किया गया जिसमें मधुमेह, हृदयरोग, हड्डी, स्त्री एवं प्रसूति, नेत्र, दमा, श्वांस, दंत, शिशु, नाक-कान-गला, चर्म, कुष्ठ रोग, फिजियोथिरेपी आदि विभिन्न रोगों का नगर के सुप्रसिद्ध 11 विशेषज्ञ डाक्टरों द्वारा रोगियों का गहन परीक्षण कर परामर्श किया गया एवं संस्था की ओर से बड़ी संख्या में रोगियों को दवाइयां वितरित की गयी। इस स्वास्थ्य मेले का 570 रोगियों ने लाभ उठाया।

स्वास्थ्य शिविर का उद्घाटन संस्था के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सोमप्रकाश गोयनका ने किया और संस्था के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

नगर के सुप्रसिद्ध चिकित्सक डा. डी.पी. अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

संस्था के अध्यक्ष श्री सुशील कुमार तुलस्यान ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया और संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। शिविर का संचालन संस्था के महामंत्री श्री सुनील कुमार मुरारका ने किया। मंत्री श्री संजीव झुनझुनवाला ने शिविर में उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

शिविर में सर्वश्री सत्येन्द्र महेश्वरी, महेश कुमार भगत, संजीव झुनझुवाला, आलोकचन्द्र कानोड़िया, हरिओम तुलस्यान, संजय अग्रवाल, महेशचन्द्र शर्मा, जयकुमार डालमिया, भजनलाल शर्मा, शिवरतन नेमानी, सुनील कुमार केड़िया, सत्यनारायण नेवटिया, हनुमानप्रसाद कानोड़िया, राकेश पोद्दार, कमलेश गर्ग, सत्यनारायण सिंहानिया, अमित अग्रवाल, बालकृष्ण शर्मा, सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे।

कुमारी तूलिका डालमिया को इनटर्नशिप

कुमारी तूलिका डालमिया, कलकत्ते में डिपार्टमेंट ऑफ लॉ. कलकत्ता विश्व विद्यालय (Dept. of Law, Calcutta University) की छात्रा हैं। इन्हें सुप्रीम कोर्ट में इनटर्नशिप (Internship) मिली है। उन्होंने 18 सितम्बर 2009 को दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट में योगदान भी दे दिया है। कलकत्ता विश्व विद्यालय से सुप्रीम कोर्ट ने अब तक कोई इनटर्न नहीं लिया था। सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता विश्व विद्यालय से कुमारी तूलिका को प्रथम इनटर्न के रूप में स्वीकार किया है। कुमारी तूलिका डालमिया को सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी तूलिका डालमिया जसीडीह (झारखण्ड) निवासी श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया, भूतपूर्व अध्यक्ष, झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन की पौत्री हैं।

सितार और सरोदवादन की स्वप्निल ऊंचाइयां छुई हैं केडिया बंधु ने

-लक्ष्मी प्रसाद अग्रवाल

सबको एक साथ इतनी उपलब्धियां नसीब नहीं होती हैं। जितनी उपलब्धियां केडिया बंधु के खाते में दर्ज हैं, उस अनुपात में, उन्हें सुर्खियां नहीं मिल पायी है। लेकिन इससे वह विचलित नहीं है। अहिंसा की पावन भूमि पार्श्वनाथ को गोद में लिये कभी अभ्रख और कोयले की खान के लिए विख्यात गिरीडीह जिले में केडिया बंधु के नाम से पहचान बना चुके दो सहोदर भाइयों ने शास्त्रीय संगीत की दुनिया में अपनी पहचान बनाने के लिये कड़ी मशक्कत की है। संगीत की दुनिया में इन्हें पूरी तरह से गुमान तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन पॉप या पाश्चात्य संगीत के कलाकारों की तरह उन्हें पहचान नहीं मिल सकी है जबकि वे इस फन के जादूगर हैं।

अपने समय के विख्यात तबला वादक और शास्त्रीय संगीत की अनेक विधाओं में पारंगत शंभुदयाल केडिया के पुत्र मोर मुकुट केडिया जहां सितार वादन में प्रवीण हैं, वहीं मनोज कुमार केडिया ने सरोदवादन के क्षेत्र में राष्ट्रीय फलक पर कई उपलब्धियां दर्ज की हैं। शंभूदयाल केडिया के पिता श्री निवास केडिया प्रसिद्ध भजन गायक रहे हैं, इस लिहाज से दोनों को संगीत विरासत में प्राप्त हुआ है। मोर मुकुट केडिया का जन्म 8 मई 1962 को और मनोज कुमार केडिया का जन्म 20 अगस्त 1963 को गिरीडीह शहर की उपनगरी पचम्बा स्थित राजस्थानी अग्रवाल परिवार में हुआ।

इनके पिता शंभूदयाल केडिया कहते हैं - दोनों की 1973 से ही सितार व सरोदवादन सिखाना प्रारंभ किया। स्थानीय गुर प्रजानंदी जी ने दोनों को संगीत के प्रारंभिक गुर (तालीम) सिखाए। 1977 में अल्लाउद्दीन खां के प्रख्यात सरोद वादक एसडी डेविड से पांच वर्षों तक दोनों ने तालीम ली। 1980 में उस्ताद अल्लाउद्दीन की पुत्री गुरु मां अन्नपूर्णा जी से बंबई (अब मुंबई) जाकर दोनों ने विधिवत संगीत शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने बताया कि इसके पूर्व ही पद्म विभूषण उस्ताद अली अकबर खां ने 1976 में केडिया बंधु को गंडा बांधकर विधिवत शिष्य बना लिया था एक प्रश्न के जवाब में केडिया बंधु के पिता ने बताया कि उन्हें संगीत से ऊंची चीज दुनिया में कुछ नहीं लगी। संगीत को उन्होंने साक्षात् ईश्वर का रूप बतलाया और कहा कि उनकी हार्दिक इच्छा है कि केडिया बंधु की जुगलबंदी पं. रविशंकर एवं उस्ताद अली अकबर खां की तरह विश्व प्रसिद्ध हो जाए।

केडिया बंधु की उपलब्धियों पर नजर डालने के पूर्व पिता शंभूदयाल केडिया की उपलब्धियों की चर्चा नहीं करना उनकी संगीत साधना के साथ अन्याय होगा। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त

अपने समय के विख्यात तबला वादक और शास्त्रीय संगीत की अनेक विधाओं में पारंगत शंभुदयाल केडिया के पुत्र मोर मुकुट केडिया जहां सितार वादन में प्रवीण हैं, वहीं मनोज कुमार केडिया ने सरोदवादन के क्षेत्र में राष्ट्रीय फलक पर कई उपलब्धियां दर्ज की हैं।

गायक, वादक एवं नृतक के साथ शंभूदयाल केडिया ने तबला वादक के रूप में सफल संगति की है। प्रसिद्ध सरोदवादक उस्ताद अली अकबर खां, बुद्धदेव दासगुप्ता, प्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद अब्दुल हलीम जफर खां, मनिलाल नाग, इंद्रनील भट्टाचार्य, ख्याति प्राप्त नर्तक सितारा देवी, डॉ. मालविका मित्रा, सुश्री मधुमिता राव के साथ उन्होंने तबला वादन किया है। गायन में स्थापित पं. जसराज, एटी कानन, पं. मुनव्वर अली खां, पं. सियाराम तिवारी, वायलिन वादक पं. बीजी जोरा के लिए भी तबला में संगति कर शास्त्रीय संगीत जगत में ख्याति अर्जित की है। इतनी ख्याति अर्जित करने के बाद भी संगीत की तरह ये सहज, सरल और सादगी से भरे हुए हैं। इन्होंने तबलावादन के लिए प्रारंभिक शिक्षा बनारस के गुरु पं. अनोखेलाल जी तथा स्थानीय गुरु स्व. वीरेन्द्र नारायण सिंह से प्राप्त की। उनका कहना है कि सीखने की उम्र सीमा में नहीं बांधा जा सकता है। यही कारण है कि वे पिछले 40 वर्षों से अब तक बनारस के पद्मभूषण पं. किशन महाराजजी से तालीम प्राप्त कर रहे हैं। इलाहाबाद से शास्त्रीय संगीत की परीक्षा केडिया बंधुओं ने 1992 में पास की। मोर मुकेट केडिया ने प्रथम श्रेणी में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। खुशी और ताज्जुब की बात यह रही कि इसी परीक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान पाने वाला युवक मोर मुकुट का सहोदर भाई, मनोज कुमार केडिया ही था। उन्होंने यह स्थान सरोद वादन में प्राप्त किया था। स्मरणी तथ्य यह है कि केडिया बंधुओं ने प्रथम श्रेणी में

प्रथम और द्वितीय स्थान संगीत प्रवीण की परीक्षा में समिति के नियमानुसार शास्त्रीय संगीत की तीनों विधाओं नृत्य, गायन एवं वाद्य संगीत के परीक्षार्थियों के बीच प्राप्त किया था। इसके बाद अपनी निष्ठा, ईमानदारी और संगीत के प्रति समर्पण भावना के कारण केडिया बंधु ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। केडिया बंधु का दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से कार्यक्रम बराबर प्रस्तुत होते रहे हैं। केडिया बंधु को बड़े-बड़े ख्याति प्राप्त कलाकारों के साथ अपनी प्रतिभाओं को प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हो चुका है। ऐसे ही कई कार्यक्रमों के कारण इनकी प्रतिभा में निखार आता गया। युवा कार्यक्रम एवं खेल विभाग, भारत सरकार के तत्वावधान में 1996 में कलकत्ता में आयोजित राष्ट्रीय युवा महोत्सव में पूरे देश में मोर मुकुट केडिया ने सितारवादक के रूप में प्रथम स्थान प्राप्त कर गिरीडीह सहित अपने सूबे (तब बिहार) का नाम रौशन किया था। इस महोत्सव में देश के 22 राज्यों से चुने हुए सितारवादकों ने हिस्सा लिया था। किसी भी कलाकार के लिए यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इस उपलब्धि के आलावा तबला सम्राट पद्म विभूषण पं. किशन महाराज (बनारस), पद्मभूषण सामता प्रसाद उर्फ गुदई महाराज, उस्ताद जाकिर हुसैन, पं. स्वप्न चौधरी, पद्म श्री पं. महापुरुष मिश्र आदि नामी-गिरामी कलाकारों के साथ भी सितार व सरोदवादन प्रस्तुत कर केडिया बंधु ने ख्याति अर्जित की है। यह क्रम अभी जारी है। विभिन्न संस्थानों से केडिया बंधु का बुलावा इस बात के साफ संकेत हैं कि इन्हें अभी और ऊंचाइयां छूना बाकी है। कोलकाता, मुंबई, इलाहाबाद, भोपाल, टाटा सहित अनेक नगरों में बड़े-बड़े कलाकारों ने इनकी प्रतिभा का लोहा माना है। ◆

मुख्यमंत्री निवास से स्वेटर व कम्बल वितरण

कोलकाता। मामराज अग्रवाल फाउण्डेशन, कोलकाता के सौजन्य से दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने अपने निवास स्थान पर बस्ती क्षेत्र के जरूरतमंद बच्चों में एक हजार स्वेटर एवं निर्धन लोगों को 200 कम्बल वितरित किया। मुख्यमंत्री ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए फाउण्डेशन द्वारा किये जा रहे ऐसे कार्यों की प्रशंसा की एवं भविष्य में भी इसे अवाध गति से जारी रखने की कामना की। इस अवसर पर सचिव ब्रह्मानन्द अग्रवाल ने आभार प्रकट किया। ट्रस्टी श्रीमती सुमिता अग्रवाल के अलावा मुख्यमंत्री की सचिव एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

भाव सृष्टि रचती है लढ़ा की कविताएं - शर्मा

'म्हारै पांती री चिंतावां' पर पाठक मंच आयोजित

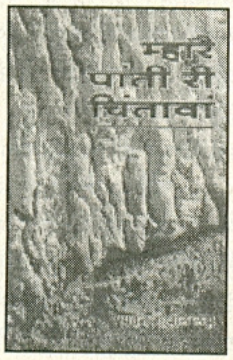

लूणकरनसर। कवि-कथाकार प्रमोद कुमार शर्मा का मानना है कि कविता अपने मूल में सत्य से साक्षात् करने की चेष्टा है। वर्तमान युग की यांत्रिकता के बीच संवेदना पर मंडराते संकट से उबरने की लिए कविता एक मानवीय आवश्यकता बन गई है। शर्मा स्थानीय न्यू टैगोर उच्च माध्यमिक विद्यालय में राजस्थानी मोट्यार परिषद व चंद्र साहित्य प्रकाशन की ओर से डॉ. मदन गोपाल लढ़ा के कविता संग्रह **'म्हारै पांती री चिंतावां'** पर पाठक मंच समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। शर्मा ने कहा कि लढ़ा की कविताएं लोक व दर्शन के अद्भुत मेल से पाठक को एक नूतन भाव सृष्टि में ले जाती है। अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् मोटाराम चौधरी ने कहा कि इन कविताओं में कवि ने जिन चिंताओं को प्रकट किया है वे निजी होते हुए भी सार्वभौमिक हैं।

पुस्तक पर पत्रवाचन करते हुए साहित्यकार रामजीलाल घोड़ेला ने कहा कि कथ्य व शिल्प के स्तर पर ये कविताएं अनूठी हैं। गुलाबराय भारद्वाज ने कहा कि लढ़ा की कविताएं मानवीय सरोकारों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। राजूराम बिजारिणयां ने अपने परचे में **'म्हारै पांती री चिंतावां'** को निजी सोच व नूतन दृष्टि की सशक्त अभिव्यक्ति बताया। व्याख्याता ओंकरनाथ योगी ने लढ़ा की भाषिक क्षमता की चर्चा करते हुए कहा कि कवि ने ठेठ राजस्थानी शब्दों का प्रयोग कर अपनी भाषा को नया तेवर दिया है। पाठक मंच में रेवतराम गुरिया, अशोक भादू, हनुमान सिंह शेखावत, मदन लाल मूण्ड आदि ने विचार प्रकट किए। कवि डा. मदन गोपाल लढ़ा ने अपनी रचना प्रक्रिया पर बोलते हुए संग्रह की 'प्रीत रो पानड़ो' व 'अडीकै है पींपळ' शीर्षक से कविताएं सुनाई। इस अवसर पर राजस्थानी मोट्यार परिषद व चंद्र साहित्य प्रकाशन द्वारा कवि मदन गोपाल लढ़ा को श्रीफल, प्रतीक चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में रचनाकार, शिक्षक व ग्रामीण उपस्थित थे।

व्यंग्य

लड़ना चुनाव सभापति का

हमने जब अपने सामने उनकी चतुरंगी सेना देखी, तब घबराए तो जरूर, पर डरे नहीं। मुकाबला तो हो ही जाए, हमने भी कमर कस ली। चुनाव अभियान का श्री गणेश हो चुका है। कोई कार से निकल रहा था तो कोई प्लेन से। किसी-किसी को हमने हेलीकॉप्टर से भी भ्रमण करते देखा था। फोन पर फोन, फैक्स पर फैक्स, प्रचार सब सुपनेट चल रहा था। ऊँचे लोग ऊँची पसंद वाली स्टाईल। कोई फैक्ट्री मालिक थे तो कोई जहाज के। कोई कई संस्थाओं के पदाधिकारी तो कोई धर्माधिकारी। मीटिंग चल रही थी फाइव स्टारों में और हम यहां घर पर बैठे-बैठे माला टरका रहे थे। जीतने की उम्मीद तो सिर्फ हमें ही थी बाकी सब डाउट फुल स्थिति में।

डॉ. नथमल झंवर, सिगमा

वैसे पैदा होते ही हमें मौके कई स्वयमेव प्राप्त हो जाते हैं, यथा रोने का, सोने का, तंग मोहल्ला और मैच्योर होने पर चुनाव लड़ने का। तो भाई साहब जब हमने सुना सभापति का चुनाव होने वाला है, तब हम क्यों पीछे रहते भला, आप ही बताइए। श्रीमती जी ने काफी मना किया, डांट डपट लगाई, अजी सामने कितने धुरंधर रथी-महारथी, प्रतिद्वंद्वी खड़े हैं। अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित कईयों के पास तो ब्रह्मास्त्र तक हैं और आप एक मच्छर जैसे। कैसे मुकाबला करेंगे, सोच नहीं रहे हैं का। हमने समझाया भागवान! तुम तनिक चिन्ता ना करो हम उन्हें ऐसे पछाड़ेंगे कि चारों नहीं बल्कि आठो खाने चित्त न हो जाएं तो हम भी कविराज नहीं। वे धुरंधर हैं तो हम महा धुरंधर है, वे गुरु घंटाल है तो हम महागुरु घंटाल। तुम तनिक मत सोचे, बस देखती रहो।

कह तो दिया साहब, पर कहने में क्या लगता है। हमने जब अपने सामने उनकी चतुरंगी सेना देखी, तब घबराए तो जरूर, पर डरे नहीं। मुकाबला तो हो ही जाए, हमने भी कमर कस ली। चुनाव अभियान का श्री गणेश हो चुका है। कोई कार से निकल रहा था तो कोई प्लेन से। किसी-किसी को हमने हेलीकॉप्टर से भी भ्रमण करते देखा था। फोन पर फोन, फैक्स पर फैक्स, प्रचार सब सुपनेट चल रहा था। ऊँचे लोग ऊँची पसंद वाली स्टाईल। कोई फैक्ट्री मालिक थे तो कोई जहाज के। कोई कई संस्थाओं के पदाधिकारी तो कोई धर्माधिकारी। मीटिंग चल रही थी फाइव स्टारों में और हम यहां घर पर बैठे-बैठे माला टरका रहे थे। जीतने की उम्मीद तो सिर्फ हमें ही थी बाकी सब डाउट फुल स्थिति में।

चुनाव का मंच सज चुका था। निर्णायकगण मंच पर विराजमान थे। मतदाता भी सजधज कर बैठे थे। इतने सजे-संवरे तो वे अपनी शादी के समय भी नहीं रहे होंगे। महारथियों की निगाहें वोटरों की ओर, हमारी आसमान की ओर। हमें लग रहा था आसमान से कोई फरिश्ता उतर रहा है आहिस्ता-आहिस्ता, उसने एक नजर सब प्रत्याशियों की ओर देखा और विजय माला हमारे गले में डाल दी। तभी उद्घोषक की आवाज सुन हमारा स्वप्न भंग हुआ। उपस्थित सज्जनों, मेरे आत्मीय भाईयों एवं बहनों। सभापति जैसे गरिमामय पद के लिये आपके समक्ष पांच उम्मीदवार उपस्थित हैं। सभी अपने आपको इस पद के लायक समझ रहे हैं। सभी इस समरांगण में अपनी दक्षता आजमाने आए हैं। आप जिसे भी अपना अमूल्य वोट देंगे, विजय का सरताज उसे ही पहनाया जाएगा। लेकिन इससे पूर्व सभी प्रत्याशी एक-एक करके आएं और अपने-अपने विचार रखें। समयावधि पांच मिनट। ऐसा कहकर उद्घोषक ने पहले क्रमांक पर विराजमान उम्मीदवार को आमंत्रित किया।

उन्होंने समस्त सभागण को अभिवादन कर माइक को नमन किया। बोले- बंधुओं हमारे समाज में सबसे अहं समस्या जो आज परिलक्षित हो रही है वह है विवाह की। बेशक कन्याओं की

संख्या कम है। यही वजह है कि कई तीस-पैंतीस साल के युवक भी अपना घर नहीं बसा पाए हैं। फलस्वरूप अन्तर्जातीय विवाह को हम रोक नहीं पा रहे हैं। हम इस पर विशेष गौर करेंगे और सुलझाने का प्रयास भी। हाँ एक अच्छी बात यह देखने में आ रही है कि कुछ सुपर स्पेशिलिटी वाले लोग अब अपने नगरों-शहरों में विवाह करना पसंद नहीं करते हैं। वे किसी हिल स्टेशन, रिसोर्ट, पिकनिक स्पॉट, तीर्थ स्थल में ही अपनी कन्या या पुत्र का विवाह करना पसंद करते हैं। यह हमारे समाज की प्रगति का सूचक है। आगे चलकर यही शादियां लंदन, पेरिसर, हांगकांग, होनोलुलु, सिंगापुर या जापान में जाकर होने लगे तो कोई बड़ी बात नहीं। विशालकाय शिप, प्लेन या समुद्र में बसे टापुओं को विवाह समारोह के लिए चयन कर लिया जाए, तो आश्चर्य नहीं मानना चाहिए और संभावनाएं भी इसी की अधिक है, हम यदि सभापति बन गए तो इसे कंपलसरी कर देंगे। बस इतना ही। धन्यवाद इतना कहकर उन्होंने अपना स्थान ग्रहण कर लिया।

अब दूसरे उम्मीदवार की बारी थी। वे पहले हिले-डुले, कुछ खिले फिर बोले- प्रिये मित्रों, साथियों मेरे दोस्तों! चाहे सभा हो, आमसभा हो या महासभा, आज युवा नेतृत्व की आवश्यकता है। युवक ही देश को, समाज को, जनमानस को सम्हाल सकता है। उनके ही कंधे पर वह भार डाला जाना चाहिए। ये बात अलग है कि हम बूढ़े बरगद होने के बाद भी विभिन्न पदों में चिपके रहना चाहते हैं अपनी अंतिम सांसों तक। हां ये बात सरासर गलत है। ज्यादा फूल-माला हमारी ये नाजुक देह बर्दाश्त नहीं कर सकती। पर जब तक सौ-पचास मालाएं यह शरीर धारण न कर ले तब तक नींद भी तो नहीं आती। इसलिए आए दिन कोई न कोई कीटी पार्टी का आयोजन करते ही रहते हैं। ये हमारी मजबूरी है इसमें समाज का भला हो न हो पर हमें तो आनंद मिलना ही चाहिए न, आखिर पदाधिकारी बने ही किसलिए हैं। लाखों का खर्च जो किया है। पर बंधुवर हम समाज का भला चाहते हैं अब, यदि आपने आज हमारे गले में विजयीभव की माला डाली तो एक प्रस्ताव जरूर पारित करेंगे कि अब पदाधिकारी केवल युवाओं को ही बनाया जाए सभापति पद छोड़कर। नमस्ते, जयहिन्द! धन्यवाद! नमस्ते, जयहिन्द!

अब तीसरे क्रमांक पर एक और धुआंधार प्रत्याशी को संचालक ने आमंत्रित किया। उनका डील-डोल, हाव-भाव पर्सनालिटी, देखकर तो हमारी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी। हम सोच रहे थे ऐसे-ऐसे रणबांकुरों के सामने हमारा तो पता ही नहीं चलेगा। तब तक उनकी आवाज हमारे कानों में सुनाई दी - प्रिय मित्रों मैं आपका अभिवादन करता हूं, स्वागत करता हूं, तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं। आज समाज को एक स्थायी निर्माण की आवश्यकता है। हम ऐसा कुछ कर जाएं कि आने वाली पीढ़ी हमें याद करें, दूसरे का मुंह न ताकना पड़े। हम स्वावलंबी बनें। मेरा आशय छात्रावास, धर्मशाला, पाठशाला, औषधालय से है गौशाला भी बनाया जा सकता है, साथ ही साथ कुछ वानप्रस्थाश्रम (वृद्धाश्रम) भी बनाएं तो क्या हर्ज है। आज इसकी आवश्यकता भी महसूस की जा रही है। आप हमें चुनकर तो भेजिए फिर देखिए हम इसकी लेन लगा देंगे। बस, इसके साथ ही मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं। धन्यवाद!

चौथे उम्मीदवार को फीवर आ जाने के कारण उन्होंने अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी। लिहाजा अंतिम वक्ता के रूप में हमें आमंत्रित किया गया। हमारे खड़े होते ही सुई पटक खामोशी छा गई, लगता था लोग हमें ही सुनने बैठे हैं। हमने अपने आपको सम्हाला फिर तरकश में से पहला तीर निकाला- मेरे दोस्तों, मेरे बन्धुओं! पूर्व वक्ताओं को आपने धैर्यपूर्वक सुना अब हमें भी सुनिए। सुनेंगे तभी तो चुनेंगे। प्रथम वक्ता ने विवाह पर काफी फ्लेश किया। अपना मन्तव्य भी दिया। हम भी दे रहे हैं। बेशक आप खंडाला जा कर शादी करें या सातवें आसमान पर हमें कोई आपत्ति नहीं। हमें सिर्फ यही कहना है कि आप अपने इस मामूली बजट में से केवल दस-बीस प्रतिशत कटौती कर किसी निर्धन कन्या के विवाह में लगा दें तो उसका तो भला होगा ही साथ ही साथ आपका भी भला हो जाएगा। आप छत्तीस नहीं बहत्तर पकवान बनाएं नो प्रॉबलम साथ ही साथ दो सौ भिक्षुओं को भी दाल-चावल खिला दे। पकवान खाने वाले तो नहीं पर ये आत्माएं आपको जरूर आशीष देकर जाएंगी, दुआएं देकर जाएंगी। जीत के साथ हार (माला) न पहनें, लोगों के दुख-दर्द सुने, उनके घर जाएं, उनकी समस्या मिटाने का प्रयास करें। भाषण देकर जाना अलग बात है काम करके दिखाना अलग। पार्टियों में समय न गवाएं, समय बीत जाएगा बात करते-करते। लोगों ने आपको वोट दिया है, आप भी कुछ दे जाइए। लोगों ने आपको हृदय से लगाया है आप भी उन्हें कलेजे से लगाइए। लोगों ने आपको आसमान पर बिठाया है, आप भी उन्हें दिल में बिठाइए। बन्धुओं में पूर्व में पदासीन पदाधिकारियों पर कोई टिप्पणी नहीं कर रहा हूं मैं तो केवल अपने मन के उद्‌गार व्यक्त कर रहा हूं कि उन्हें भी ऐसा कुछ सोचना चाहिए, ऐसा ही कुछ करना चाहिए। भावनाओं की श्रृंखला में निम्न पंक्ति और -

आपसे मिला जो स्नेह है, प्यार और अपार नेह है।
कुछ न कर सके तो जानिए, व्यर्थ यह हमारा देह है॥

अन्त में मैं यही कहना चाहूंगा, हममे से आप जिसे भी चुने सोच-समझकर चुनें।

जय हिन्द, जय भारत, जय महेश ◆

बेशक आप खंडाला जा कर शादी करें या सातवें आसमान पर हमें कोई आपत्ति नहीं। हमें सिर्फ यही कहना है कि आप अपने इस मामूली बजट में से केवल दस-बीस प्रतिशत कटौती कर किसी निर्धन कन्या के विवाह में लगा दें तो उसका तो भला होगा ही साथ ही साथ आपका भी भला हो जाएगा। आप छत्तीस नहीं बहत्तर पकवान बनाएं नो प्रॉबलम साथ ही साथ दो सौ भिक्षुओं को भी दाल-चावल खिला दे। पकवान खाने वाले तो नहीं पर ये आत्माएं आपको जरूर आशीष देकर जाएंगी, दुआएं देकर जाएंगी।

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are companies that also finance dreams, aspirations and hopes. Srei, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, Srei excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships."

Srei not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in Human Resource Development and consistently acknowledging the blessings of God makes Srei a proud recipient of the Wills Harman Spirit at Work Award.

At Srei, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI

Visit us at www.srei.com

Infrastructure: Equipment and Project Finance / Project Advisory & Development / Venture Funds Investment Banking/ Insurance Broking / **QUIPPO**-Infrastructure Equipment Bank

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28, February 2010
RNI Regd. No. 2868/68

S R RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exports
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

HEAD OFFICE :

8A, EXPRESS TOWER,
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751
Fax: 91-33-2281 5380
Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION :

MAIN ROAD,
BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441
Telefax: 91-6767-276161

SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com